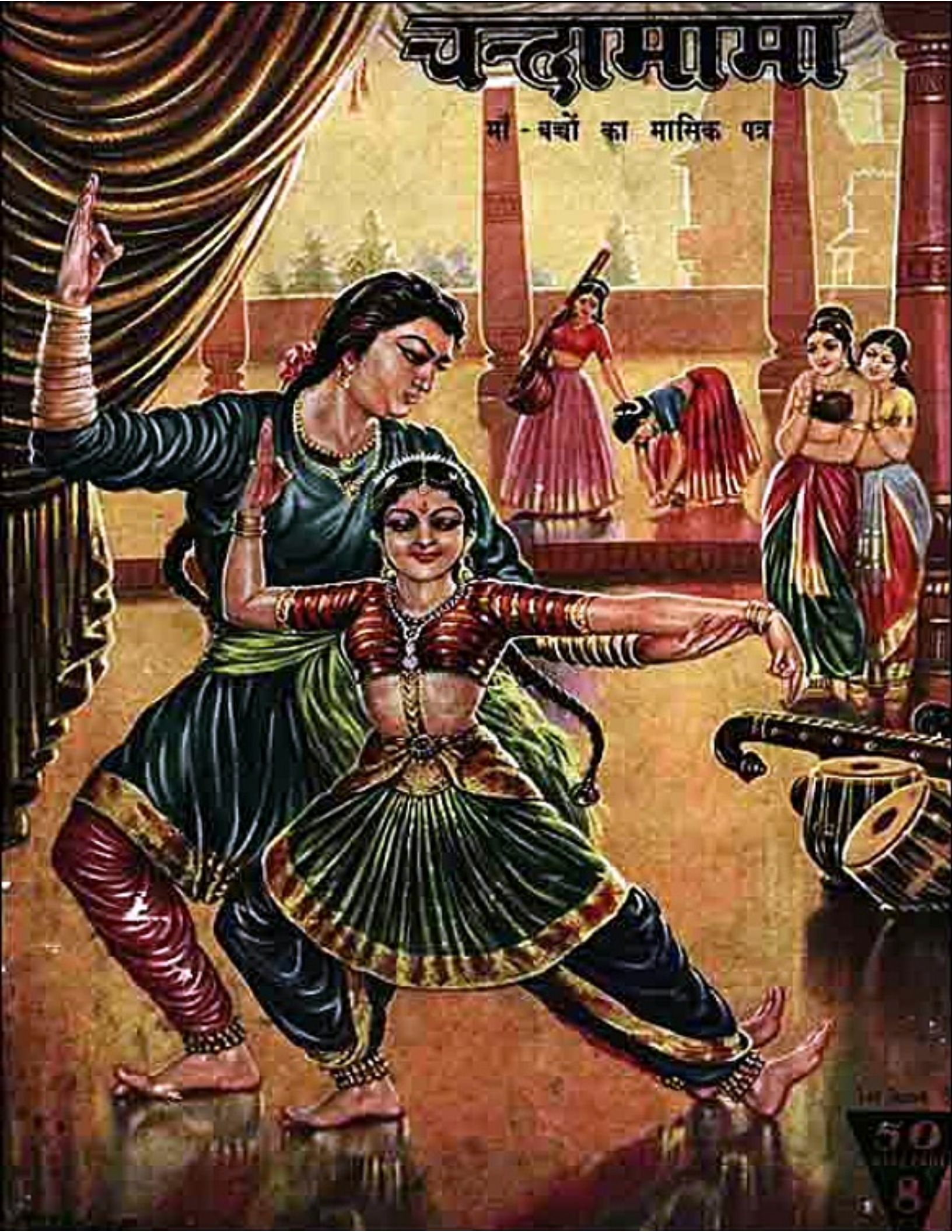


चन्द्रामासा

मा - बच्चों का मासिक पत्र





पुरस्कृत
पारिचर्यात्मक

‘ले खा ले, मेल बढ़ा ले!’

प्रेषक :
श्री पशुपतिनाथ, देहली-६

"मैं देखती हूँ, आपके कपड़ों के लिए भी टिनोपाल का इस्तेमाल किया गया है।"



सफेद कपड़ों को चमकादार और अधिक सफेद बनाने का एकही तरीका है-टिनोपाल। जोड़ता टिनोपाल बहुत समय तक चमका है और एक बार प्रयोग करने से तीन बार बार की तुलना हो जाती है।

टिनोपाल

"टिनोपाल" के आर. वायटी, एल. ए. ब्राउन, रिफ्लेक्टिव आ एम्ब्लेड रेड मार्क है।



एम्सग्रेटेड केमिकल्स एण्ड हावस्ट्रस कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, हाफ बक्स नं. ९६५
बम्बई

चन्दामामा

जून १९५७

विषय - सूची

संपादकीय	१
सिकन्दर और चित्रकार	२
मुख - चित्र	३
जग की रीति जातक-कथा	४
तीन मान्त्रिक धारावाहिक	९
भूतों का टीला	१७
विचित्र न्याय	२५
भेदोपाय	३३
मित्र - भेद पय - कथा	४३
गंधे का ज्योतिष	४६
भुवन - सुन्दरी	४९
बढ़ते जाना.... कविता	५७
नाविक सिन्धुवाद	५८
भेड़िये की शरारत	६३
फोटो - परिचयोक्ति	६५
कछुवे	६६
जादू के प्रयोग	६८
समाचार वसैरह	७०
चित्र - कथा	७२



शफेद बालोंको श्याम बनाईये..



दिमागको ठंडक
पहुंचानेवाला
भुमधुर सुवासित
सर्वोत्तम
केश तेल.



सोल अजन्ट: फोन 51802

अम. अम. श्वंभातवाला

रायपुर - अहमदाबाद



अधिक सौन्दर्य के लिए...



रेसि

रूनो
और
पाउडर



© AREA 354



बच्चों के
स्वास्थ्य के
रक्षक

**नौनिहाल
बेबी टॉनिक**

बच्चों के इन रोगों में काम आता है

साधारण शारीरिक कमजोरी,
मुख (बच्चों का लय रोग), हड्डियों
का नर्म और टूट्टा हो जाना, मसूढ़ों
की मृजन, जोड़ों की मृजन, मुँह
आना, नजला व जुकाम, रोग के
पीछे की कमजोरी, सुरदरी खाल।

नौनिहाल

नन्हे बच्चों की दिलपसन्द खुराक



**नौनिहाल
ग्राइप सीरप**

बच्चों के इन रोगों में काम आता है

कब्ज, बदन दर्द और अफारा, दूध
डालना, दस्त व पेटिश, दांत
निकलना, जिगर और तिल्ली का
बढ़ना, नींद में चौंकना, मुँह आना
और राल बहना, चिन्ने और कीड़े,
प्यास की अधिकता।

हमदर्द दवाखाना [रू] देहली

Hamudard

DAWAKHANA (RUST) DELHI



चन्द्रामासा

संचालक : चक्रपाणी

भर्तृहरि का एक श्लोक है—“निन्दन्तु नीति निपुणा
यदि वा स्तुवन्तु, अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः
न विचलन्ति पदं न धीराः”..... जिसका अर्थ है, नीति
निपुण निन्दा करें, या प्रशंसा करें, आज ही मृत्यु
हो, या युगों बाद, धीर पुरुष न्याय के पथ से
विचलित नहीं होते।

इस आदर्श का निरूपण, इस अंक में प्रकाशित कहानी—
“जग की रीति” करती है। यह प्राचीन जातक कथा है।
बहुत ही महत्वपूर्ण है।

कई काम हम ऐसे करते हैं, जो अनुचित होते हैं और
हम केवल दुनियाँ के लिए करते हैं। यह ठीक नहीं। हम
में सत्य का पालन करने के लिए साहस होना चाहिए। चरित्र
के बल से बढ़कर कोई बल नहीं है। चरित्र के आधार में
सत्य का भाषण है। सत्य के भाषण से व्यवहार में स्वच्छता
आती है और मनुष्य शनैः शनैः मनसा, वाचा, उत्तम
चरित्रवान बन जाता है।

वर्ष : ८

जून १९५७

अंक : १०

सिकन्दर और चित्रकार

सिकन्दर ने एक प्रसिद्ध चित्रकार को बुलाकर उससे अपने घोड़े का चित्र बनाने के लिए कहा। चित्रकार ने बहुत परिश्रम करके घोड़े का चित्र बनाया। सिकन्दर उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। पर उसने अपनी प्रसन्नता बाहर व्यक्त न की। उसने सोचा कि प्रसन्नता व्यक्त करने का मतलब होगा कि वह चित्रकार का बड़प्पन स्वीकार कर रहा है। इसलिए उसने कहा कि चित्र में कई खराबियाँ हैं। इस तरह कड़ने से उसने सोचा कि चित्रकार उसके सामने झुक झुक सलाम करेगा। चित्रकार ने कुछ न कहा। वह चुपचाप सुनता रहा। अन्त में उसने कहा—“क्या एक बार आप अपना घोड़ा यहाँ मँगवा सकेंगे?”

सिकन्दर यह न जान सका कि वह घोड़ा क्यों देखना चाहता था। उसने घोड़े को मँगवाया। घोड़ा आते ही चित्र को देखकर हिनहिनाने लगा।

तब भी सिकन्दर को कुछ समझ में न आया। तब चित्रकार ने बताया—“इस चित्र के घोड़े को सच जानकर वह हिनहिना रहा है। मेरी सजीव कला के लिए इस से बढ़कर और प्रमाण क्या चाहिये?”

सिकन्दर को अपनी गल्ती मान्य हुई। उसने बड़ा इनाम देकर, उस चित्रकार का सम्मान किया।



मुख - चित्र

धर्मराज, द्रौपदी, भीम, वेष और नाम बदलकर जब राजा विराट के पास गये और उनके यहाँ कान करने लगे तब अर्जुन बृहन्नला का रूप धारण कर राजा विराट के पास गया। राजा को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—“तुम कौन हो?”

“महाराज! मेरा नाम बृहन्नला है। मैं नाट्यकला में बहुत निपुण हूँ। बच्चों और बड़ों को भी नाट्यकला की शिक्षा दे सकता हूँ। वीणा, मृदंग आदि बजाने में भी मैं बहुत प्रवीण हूँ।” अर्जुन ने महाराजा से कहा। विराट को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। “तुम्हें देखकर तो ऐसा मालूम होता है कि तुम पर धनुष-बाण खूब फरेगा। स्त्रियों को नाट्य-कला सिखाने की तुम पर नौबत क्यों आई है! धनुष-बाण लेकर, मेरी मदद करो।” उसने धनुष-बाण मँगवाकर अर्जुन के सामने रखवाया।

अर्जुन ने उन्हें देखकर ऐसा अभिनय किया, जैसे उन्हें देखकर डर रहा हो। “महाराज! मैं इन्हें पकड़ना तक नहीं जानता हूँ। मैं सचमुच बृहन्नला हूँ। मुझे पर कृपा कर, मुझे नाट्य के लिए रख लीजिये।” उसने विनयपूर्वक कहा।

तब विराट ने अपनी लड़की उत्तरा को बुलाकर कहा—“बेटी! इनका नाम बृहन्नला है। आज से ये तुम्हें नाट्य सिखायेंगी, और तुम्हारे साथ सहेली के रूप में रहेंगी।” अर्जुन, उत्तरा के साथ अन्तःपुर में चला गया और उत्तरा को प्रति दिन नृत्य सिखाने लगा।

कुछ देर बाद, विराट अस्तबल की ओर गया। उस समय नकुल भी वहाँ आकर घोड़ों को देखने लगा। विराट ने उसे बुलाकर पूँछा—“क्यों बेटा! क्या तुम घोड़ों के बारे में कुछ जानते-बूझते हो?” नकुल ने जवाब दिया—“मैं अश्व-चिकित्सा जानता हूँ। जंगली घोड़ों को भी पालतू बनाना मालूम है। मुझे कृपा करके नौकरी दीजिये।” राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

उसी दिन, सहदेव ने भी राजा विराट के यहाँ भाले का काम पा लिया। इस प्रकार पाँचों पाण्डवों और द्रौपदी ने अपना अज्ञात वास शुरू किया।



जग की रीति

उन दिनों ब्रह्मदत्त काशी का राजा था। वोधिसत्त्व, कृष्णद्वैपायन नाम के रईस ब्राह्मण के रूप में कोशाम्बी नगर में पैदा हुए। वे सांसारिक बाधाओं का परिणाम जानते थे; इसलिये उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति दान-दक्षिणा में दे दी। फिर उसके बाद सन्यास लेकर, वे पचास वर्ष तक हिमालय में घूमते-फिरते रहे। वहाँ कन्द-मूल खाकर उन्होंने तपस्या की, पर इतना होने पर भी तपस्या के कारण उन्हें कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हुई। उलटे शरीर के सारे अंग शिथिल पड़ गये।

हिमालय को छोड़कर, तीर्थ-यात्रा करते करते कृष्णद्वैपायन काशी राज्य पधारे। उन्हें एक जगह छुटपन का साथी, माण्डव्य एक ग्राम में दिखाई दिया और उसने उनका बड़ा आतिथ्य किया। माण्डव्य ने उन्हें

अपने घर में रहने के लिए बड़ा आग्रह किया। कृष्णद्वैपायन ने वहाँ रहने को मान लिया। उनके लिए उसने एक शोषड़ी बनवाई, और उनकी जरूरतों को पूरा करता आया।

एक दिन, माण्डव्य का लड़का, यज्ञदत्त जब गेंद से खेल रहा था तो वह गेंद अचानक एक बाम्बी में जा घुसी। गेंद लेने के लिए यज्ञदत्त ने बाम्बी में हाथ रखा। उस बाम्बी में साँप था। तुरत उसके हाथ पर साँप ने काटा। साँप का विष शरीर में चढ़ने लगा, और यज्ञदत्त देखते देखते बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया।

जब उनका लड़का इस हालत में था तब माण्डव्य और उसकी पत्नी ने उसको देखा। वे कुछ नहीं कर सके। माण्डव्य



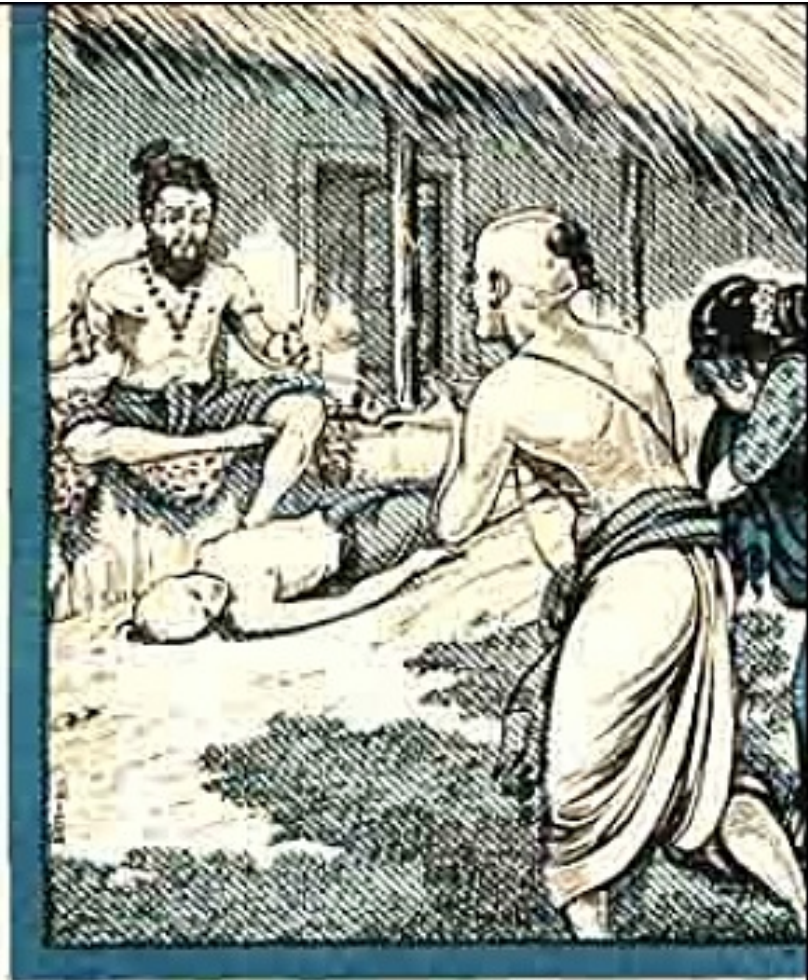
उसको अपने हाथों पर उठाकर, पत्नी के साथ कृष्णद्वैपायन के पास पहुँचा। वे बहुत दुःखी हुए। और लड़के को उनके पैरों के पास रख दिया।

“—महात्मा! बड़ा अनर्थ हो गया है। आप अपनी तपस्या के फल से मेरे इस लड़के को जीवित कर हमें उपकृत कीजिये” यज्ञदत्त के माँ-बाप गिड़गिड़ाये।

कृष्णद्वैपायन को कुल न सूझा। “आप गलती कर रहे हैं। मेरे पास कोई शक्ति या सिद्धि नहीं है। मैंने बहुत दिन तक तपस्या तो जरूर की, पर उस तपस्या का कोई फल मुझे न मिला। आखिर मैं मूल-बूटी की औषधियाँ भी नहीं जानता। इस दशा में मैं आप लोगों की कैसे सहायता कर सकता हूँ।” उन्होंने उनसे कहा।

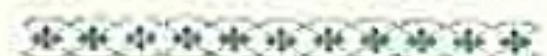
“तपस्या भले ही सफल न हुई हो, पर इतने दिन की तपस्या व्यर्थ नहीं जायेगी। आप सत्य की शपथ कीजिये। लड़का जरूर जी उठेगा।” माण्डव्य ने कहा।

कृष्णद्वैपायन इसके लिए मान गये। और उन्होंने यह निम्न श्लोक सत्य की शपथ लेकर धीमे धीमे पढ़ा :



सत्ताहं एवाहं प्रसन्नचित्तो
पुण्यस्थिको अचरिं ब्रह्मचरियं
अयापरं यं चरित ममयिदं
वस्यानि पञ्चास समाधिकानि
अकामको वाहि अहं चरामि
एतेन सन्नेन सुपत्थि होतु
इतं विसं जीवतु यंन्दत्तो ।

[मैंने पुण्य के लिए, निर्मल चित्त हो एक सप्ताह तक ब्रह्मचर्य का पालन किया है। उसके बाद मैंने पचास साल तक जो तपस्या की, वह शुद्ध चित्त से नहीं की। इस सत्य के शपथ के फलस्वरूप मैं चाहता





है कि कुछ असर हो।” कृष्णद्वैपायन ने माण्डव्य से कहा।

माण्डव्य कृष्णद्वैपायन की बात मान गया। और उसने इस प्रकार सत्य की शपथ ली :

“यस्मादानं न अभिनन्दिं कदाचि
दिरवानाहं अतिथिं वा सकले
न चापिमे अप्पियं अवेदुं
बहुस्तुता समणा ब्राह्मणान्
अकामको वा हि अहं ददामि
एतेन सन्नेन सुवत्थि होतु
हतं विसं जीवतु संज्जत्तो।

[“मैंने अतिथियों का सत्कार किया है ; पर इच्छापूर्वक नहीं। ज्ञानी श्रमण भी यह न जान सके कि मैंने उनका आतिथ्य इच्छापूर्वक नहीं किया है। मैंने दान भी अनिच्छा पूर्वक ही दिया। इस मेरे सत्य की शपथ से उपकार हो। विप चला जाये और यज्ञदत्त पुनः जीवित हो उठे।]

माण्डव्य के इस प्रकार सत्य की शपथ करने से यज्ञदत्त की छाती में से थोड़ा और विप निकला और फर्श में चला गया। लड़का उठकर तो बैठ गया। पर खड़ा न हो सका। तब माण्डव्य ने श्रुत अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा—“तुम भी

हूँ कि यज्ञदत्त का विप कम हो और वह पुनः जीवित हो।]

तुरन्त लड़के की छाती से थोड़ा विप बाहर निकला और फर्श पर गिरकर अन्दर समा गया। उसने आँखें खोलीं और माँ-बाप की ओर देखते हुए कहा—
“माँ” फिर उसके बाद उसने करवट बदली और देखते देखते वह बेहोश होकर गिर गया।

“देख लिया न ? मैं सत्य के शपथ से पूरा विप बाहर न कर सका। तुम भी सत्य का शपथ करके देखो। हो सकता





क्यों नहीं सत्य की शपथ लेती ! अगर तुम भी वैसा करोगी तो लड़का स्वस्थ हो, उठकर चलने-फिरने लगेगा । ”

“मुझे भी सत्य कहना है ! पर मैं वह आपके सामने नहीं कह सकती । ” माण्डव्य की पत्नी ने कहा ।

“पगली ! तुम क्यों आनाकानी करती हो ! आखिर अपने लड़के को तो देखो । हमारे लिए लड़के से बढ़कर क्या है ! सत्य का प्रमाण करो । ” माण्डव्य ने अपनी पत्नी को प्रोत्साहित किया । वह मान गई और उसने यह निम्न श्लोक पढ़ा :

असौ बिषो तात पट्टत तेजो
ये तं अदृष्टि पतरा इदं वि
तस्मि च मे अग्निष्य ताव अज
पितरि च मे नस्ति कोचि बिसेस
एतेन सचेन सुवर्ति होतु
हंतं विसे जीवतु गंढस्तो ।

[बेटा ! आज जिस बाम्बी में तूने हाथ डाला है, उसमें रहनेवाले साँप को देखकर मुझे जितनी घृणा हुई, उतनी घृणा तुम्हारे पिता को देखकर भी होती है । इन दोनों में मेरे लिए कोई भेद नहीं है । मेरा इस सत्य प्रमाण से तेरा उपकार हो । विष चला जाये और यज्ञदत्त पुनः जीवित हो उठे ।]



इस सत्य की शपथ से यज्ञदत्त के शरीर से पूरा विष बाहर आगया और वह पहिले की तरह उछलने-कूदने लगा ।

माण्डव्य ने कृष्णद्वैपायन की ओर मुड़कर कहा—“स्वामी ! आपने उत्तम तपस्या का अवलम्बन किया । परन्तु आपने यह अपनी इच्छा के विरुद्ध क्यों किया ? ”

कृष्णद्वैपायन ने कहा—“इसका एक ही कारण है । एक बार सन्यास लेकर अगर कोई चला जाता है, यदि वह फिर गृहस्थ होना चाहें तो सब उसकी निन्दा करते हैं, उससे घृणा करते हैं । यद्यपि



यह जीवन मुझे पसन्द न था, तो भी मैं अपने गौरव के लिए, वह जीवन निभाता रहा। तुम अतिथि-अभ्यागतों का इतना सम्मान-सत्कार करते हो, वह बिना इच्छा के क्यों करते हो ?”

“मेरे बाप-दादा, प्रसिद्ध दानी थे। इसलिए मुझे भी उनकी परम्परा का पालन करना पड़ा। कहीं लोग यह न कहने लगे कि मैंने उनके यश पर कलंक लगाया है, मैं दान-दक्षिणा करता जाता हूँ। मुझे दान-दक्षिणा करने की बिल्कुल इच्छा नहीं है।” यह जवाब देकर, उसने पत्नी की ओर मुड़कर कहा—“छुटपन में ही तुम मेरी पत्नी बनकर मेरे घर आयी। इतने साल मेरे साथ रही। जब मुझ पर तुम्हें प्रेम नहीं, तो न मालूम तुम इस जीवन से कितने उब गयी होगी। क्यों तुम यह सब अब तक सहती रही ?”

माण्डव्य की पत्नी ने कहा—“क्योंकि हमारे वंश में स्त्री के लिए पति के साथ गृहस्थ धर्म निभाना कर्तव्य है, इसलिए ही मैं यह जीवन सहती रही। अगर आप को छोड़कर मैं किसी और से शादी करती तो सारा संसार मुझे कुलटा कहता। अपने पुत्र के हित को ध्यान में रखते हुए मैंने यह बात किसी से नहीं कही।”

“सच कहा है। इसलिए मैं तुझे दोष नहीं देता। मैं तो यह भी शपथ करूँगा कि आइन्दा मैं तुम्हें प्रेम से देखूँगा” माण्डव्य ने अपनी पत्नी से कहा।

“अगर तू दान-दक्षिणा करना चाहता है, तो इच्छा पूर्वक ही कर, बिना इच्छा के न कर। मैं भी अपनी तपस्या अब शुद्ध चित्त से ही करूँगा।” कहकर कृष्णद्वैपायन, माण्डव्य से विदा लेकर अपने रास्ते पर चले गये।





[५]

[पद्मपाद ने पिंगल को भस्त्रककेतु की बातों में न पड़ने दिया । दोनों मिल कर भस्त्रकपर्वत की ओर निकले । रास्ते में उन्हें भूत वगैरह से मुक्ताबला करना पड़ा । मगर के रूप में, महामायावी के शिष्य पद्मपाद की सहायता करना मान गये । मगर अदृश्य हो गये ।]

महामायावी के शिष्यों के अदृश्य होते ही, जानते ही हों कि उन्हें पकड़ने के लिए मेरे पिंगल ने आश्चर्य से पद्मपाद की ओर दोनों भाई अपनी जान सो बैठे थे !.... मैं देखकर कहा—“पद्मपाद ! कहीं वे दोनों भी उनके चुंगल से मुश्किल से जीते जी मगर के रूप में फिर नदी में तो नहीं निकल सका ।”

“फिर वे गये कहाँ हैं ?” पिंगल

“मगर के रूप में ?—” पद्मपाद हड़ ने पूछा ।

बड़ाया । फिर सम्भलकर, हँसते हुए उसने “यह कोई खास बात नहीं है कि वे कहाँ और किस रूप में गये हैं ! हमें इस जायें तो कहानी फिर शुरू से चलेगी । तुम नदी में स्थित देवालय में प्रवेश करना है ।



हमें यह देखना है कि इस नदी में एक बूँद पानी भी न हो। आओ हम इस काम में लगे। इस काम में, महामायावी के शिष्य हमारी मदद करेंगे।”

“इतनी बड़ी नदी को वे कैसे सुखा सकते हैं?” पिंगल ने अपना आश्चर्य व्यक्त किया।

“ऐसा करने पर ही हमारा काम पूरा हो सकेगा। मैं अभी मन्त्र जपने की तैयारी करता हूँ। यह तुम्हारी जिम्मेवारी है कि महामायावी के आधीन शक्तियाँ, उस मन्त्र को विफल न कर दें। यानि, तुम्हें ही मेरी रक्षा करनी होगी।”

मुझे तुम्हारी रक्षा करनी होगी?” पिंगल ने घबराते हुए पूछा।

“हाँ....तुम्हें ही मेरी रक्षा करनी होगी। जब मन्त्र के ध्यान में होऊँगा, तब मुझे ही नहीं मालूम होगा कि मेरे चारों ओर क्या हो रहा है। इसलिए हथियार लेकर, तुम्हें ही मेरी रक्षा करनी होगी। यह लो हथियार।” कहते हुए पद्मपाद ने हाथ पसारें....आँखों को चकाचौंध करनेवाली एक गदा को लेकर, उसने पिंगल को दिया। पिंगल ने, पद्मपाद से गदा लेकर उसे

उस देवालय के, जब तक पाँचों दरवाजे न खुले हुए हों, तब तक हम महामायावी के समाधि वाले कमरे में नहीं पहुँच सकते। वे इस काम में हमारी मदद करेंगे।” —पद्मपाद ने कहा।

“मैं अच्छी तरह तैरना नहीं जानता। मैं इस नदी में स्थित देवालय तक कैसे पहुँच सकूँगा?” पिंगल ने पूछा।

पिंगल के इस नादान प्रश्न को सुनकर, पद्मपाद ने हँसकर कहा—“पिंगल! भले ही तुम्हें तैरना न आये कोई बात नहीं; पर यह काफ़ी है कि तुम में हिम्मत हो।



धुमा-फिराकर, अपने कन्धे पर रख लिया। पद्मपाद ने स्नेह से उसकी ओर देखा—
“अच्छा तो पिंगल! मैं अब समाधिस्थ हो कर, मन्त्रोच्चारण कर सकता हूँ। तरह तरह के रूप धारण कर, महामायावी के भूतों से अपने को और मुझे बचाने का काम अब तुम्हारा रहा। जल्दी ही मैं नदी के जल को रोककर, सुखा दूँगा।” पद्मपाद ने कहा।

“अच्छा, यही सही। मैं इस गदा की सहायता से बड़े बड़े भूतों को भी दूर खदेड़ दूँगा।” पिंगल ने कहा।

पद्मपाद नदी के किनारे पद्मासन लगाकर बैठ गया और नदी के पानी को हाथ में लेकर कहने लगा—“जल, सर्वस्तम्भनं....कुरु, कुरु शीघ्रं वश्यं....ठ: ठ:” कहते कहते उसने आँखें बन्द कर लीं।

पद्मपाद ने आँखें बन्द ही की थीं कि आकाश से भयंकर चीत्कार की ध्वनि सुनाई देने लगी। पिंगल घबरा गया। फिर हिम्मत बाँध कर, कन्धे पर से गदा हाथ में लेकर वह आकाश की ओर देखने लगा।

क्षण भर में आकाश में घने बादल छा गये। देखते देखते बादल हाथी के



रूप में संकुचित हो गये। “ओहो....तुम वही जादू के हाथी हो, जिसने थोड़ी देर पहिले मेरा सामना किया था! अब फिर आये हो।” कहकर पिंगल ने गदा को ज़ोर से पकड़ लिया। परन्तु वह बादल हाथी से तुरन्त पक्षी बन गया और पंख फड़फड़ाने लगा।

“यह सचमुच कोई विशाल भूत पक्षी है।” पिंगल ने सोचा।

वह पक्षी भयंकर चीत्कार कर, पंख फड़फड़ाता ठीक उसी जगह पर उतरने लगा, जहाँ पिंगल खड़ा था। उसके



पंखों के फड़फड़ाने से, उस जगह के पेड़-पौधे इस तरह हिलने लगे, जैसे कोई तूफान चल रहा हो।

पिंगल न हिला। वह जानता था कि वह पक्षी उसको मुर्गी के बच्चे की तरह मारने के लिये चला आ रहा था। फिर भी उसके हाथ में जादू की गदा थी।

पिंगल ने दोनों हाथों में गदा लेकर ऊपर उठाई। वह विशाल पक्षी उसके सनीप आ रहा था। उसकी लम्बी नाक, तेज़ पैरों के नाखून, अँगारे-सी आँखें, बड़े भयंकर और भद्दे थे। वह ज्यों ज्यों पास

आने लगा, त्यों त्यों हवा तेज़ चलने लगी। हवा के जोर में पिंगल अपनी जगह न खड़ा रह सका। वह कुछ दूर धकेल दिया गया। उसी समय उस भूत पक्षी ने उसके सिर पर अपनी नाक रखी। पिंगल ने गदा चलाई। परन्तु पक्षी चोट से बच गया और चिल्लाता चिल्लाता ऊपर उड़ गया।

“जान बची।” यह सोचते हुए पिंगल ने ऊपर देखा। भूत आकाश में बहुत दूर चला गया था और तेज़ी से नीचे की ओर आ रहा था। पिंगल भूमि पर पैर जमाकर, गदा ऊपर उठा कर खड़ा था। ज्यों ही पक्षी उसके सिर पर मँडराया, त्यों ही उसने गदा उसके सिर पर मारी। तुरत ऐसा शब्द हुआ, जैसे कोई पहाड़ फूट पड़ा हो। विशाल पक्षी के अंग अंग अलग हो गये। सिर एक तरफ़, पंख एक तरफ़। वह उड़ा आकाश में और भूमि पर गिर गया।

पिंगल वह दृश्य देखकर फूला न समाया। “जय पद्मपाद” कहता कहता गदा जल्दी जल्दी घुमाने लगा। फिर उसने ध्यानस्थ पद्मपाद को देखा। पद्मपाद हिल-डुल नहीं रहा था। उसकी आँखें बन्द

थीं। ओंठ जरूर कमी कमी हिलते थे।
 “इनका ध्यान नहीं बिगड़ा। यही काफ़ी है।” सोचकर पिंगल पीछे मुड़ा था कि पिंगल को इन इन धुंधलकों का शब्द सुनाई दिया।

पिंगल हैरान हो गया। सामने सर्वाभरण से मुशोभित अप्सरा-सी एक युवती नाचती गा रही थी। उसका सौन्दर्य, संगीत, नृत्य देखकर, पिंगल एक क्षण अपने को भूल बैठा।

“पिंगल! मैं तुम्हारा सौन्दर्य देखकर यहाँ आयी हूँ। मुझ से विवाह करो। मैं तुम्हारे लिए सब प्रकार की सुख-सम्पदा, इकट्ठी करके दूँगी।” उस युवती ने कहा।

पिंगल यह सुनकर, अपने को सम्भालते हुए बोला—“तुम मेरा सौन्दर्य देखकर यहाँ आयी हो? तुम शायद मुझे कोई राजकुमार समझ रही हो? वह ग़लती न करो। मैं मछियारा हूँ।” उसने कहा।

“मछियारे हो तो क्या? तुम जैसा सुन्दर चारों लोकों में कोई नहीं है।” कहती वह युवती नाचने लगी।

पिंगल ने उसकी ओर सन्देह करते हुए पूछा—“तुम्हारी आवाज़ के साथ



और भी कई वाद्यों की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। वे वाद्य मुझे क्यों नहीं दिखाई देते?”

“जब तक तुम मुझ से विवाह न करोगे, तबतक तुम्हें वे न दिखाई देंगे। मैं खेचरी हूँ।” उस युवती ने कहा।

“तुम खेचरी हो? यानि आकाश में विचरने वाली गन्धर्व कन्या हो।” कहता कहता, गदा लेकर पिंगल उसके पास गया।

“पिंगल! उस गदा को दूर फेंक दो। मुझे आयुधों से डर है।” कहती खेचरी जल्दी जल्दी पीछे हटी।





पिंगल जान गया कि वह युवती कौन थी। वह कोई भूत थी, जो उसे उड़ा ले जाने के लिए आई थी। क्योंकि वह पद्मपाद की रक्षा कर रहा था ताकि उसका ध्यान भंग न हो, उसने अपने क्रोध को दबाकर और सन्तोष का अभिनय करते हुए कहा — “हे गन्धर्व कन्या ! मुझे तुमसे विवाह करने के लिए कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु मुझे इस समय यह अफ़सोस है कि मेरे परदादे की तीसरी पत्नी यहाँ नहीं है। उन्होंने ही मुझे पाला-पोसा है। खैर, कोई बात नहीं। हमारी वंश-परम्परा के अनुसार विवाह के पहिले इस गदा से सिर पर एक बार मारने दो।” वह आगे बढ़ा।

खेचरी चिल्लाती और पीछे भाग गई। इस बीच गदा से पिंगल ने उसके सिर पर चोट मारी। तुरन्त स्त्री रूप में आया हुआ भूत टुकड़े टुकड़े हो गया, और हवा में उड़ गया।

पिंगल ने अट्टहास किया। वह पीछे मुड़ कर पद्मपाद के पास आया। पद्मपाद अब भी आँखें मूँदे बैठा था। पिंगल की नज़र नदी की ओर गई। उसके आश्चर्य

की सीमा न रही। नदी का पानी सूखा जा रहा था। नदी के पानी में रहनेवाले जलचरो के झुण्ड के झुण्ड, इधर-उधर कूद-फाँद रहे थे।

‘पिंगल’ पुकारते हुए पद्मपाद ने आँखें खोलीं। पिंगल एक छलांग में पद्मपाद के पास गया। “पद्मपाद ! नदी की तरफ देखिये।”—उसने आश्चर्य से कहा।

पद्मपाद ने नदी की ओर देखकर कहा—“वाह, महामायाजी के शिष्यों ने अपने वचन का पालन किया। मगर वह उजड़ा हुआ देवालय कहाँ है !”

पिंगल ने नदी की ओर गौर से देखते हुए कहा—“वह देखो! अभी अभी मन्दिर का शिखर पानी से ऊपर निकल रहा है। क्या कही देवालय है, जिसमें महामायावी की समाधि है!”

पद्मपाद भी उसी ओर देखने लगा, जिस ओर पिंगल देख रहा था। उसने सन्तोष से हँसकर कहा—“वह ही उजड़ा हुआ देवालय है। जब नदी में एक वृन्द भी पानी न होगा, महामायावी के दोनों शिष्य हमारे पास आ जायेंगे। जब मैं ध्यान में था, मेरा ध्यान भंग करने के लिए पिशाच—भूत वगैरह तो नहीं आये थे!”

पिंगल ने खुशी खुशी, उस विशाल पक्षी, और खेचरी के बारे में कहा, जिनको उसने मार दिया था। सब सुनकर, पद्मपाद ने पिंगल का कन्धा थपथपाते हुए

कहा—“पिंगल मुझे इस बात का बहुत सन्तोष है कि गन्धर्व कन्या के रूप में आये हुए भूत के चुंगल में तुम न पड़े। जब तुम उजड़े हुए देवालय में घुस रहे होगे, तब भी दो चार इस प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा। होशियार रहना।”

इस बीच नदी में से आवाज आई—“महामान्त्रिक!” पद्मपाद और पिंगल ने उस ओर देखा। नदी में एक वृन्द भी पानी न था। ताड़ के समान ऊँची, एक पत्थर की दीवार और उसमें छुपा हुआ एक दरवाज़ा और दीवार के पीछे स्पष्ट और अस्पष्ट रूप से दीखता एक उजड़ा देवालय, उन्हें दिखाई दिया। दीवार के पास ही महामायावी के दोनों शिष्य खड़े थे। वे पद्मपाद की ओर देख रहे थे।
(अभी और है)



A detailed illustration of a man in traditional Indian attire, including a dhoti and a shawl, carrying a dead person on his back. He is walking through a graveyard with several tombstones visible in the background. The scene is set in a dark, wooded area with a large tree on the left. The man has a sword or dagger tucked into his belt. The overall tone is somber and mysterious.

भूतों का टीला

विक्रमार्क ने अपनी ज़िद न छोड़ी, पेड़ पर से शव उतारा। उसे कन्धे पर डालकर, वह श्मशान की ओर चल पड़ा।

तब शव में स्थित बेताल ने कहा—
“राजा! तुम्हें देखकर मुझे वीरभानु नाम का एक वहादुर याद आ रहा है। उसे भी तुम्हारी तरह अकेले भूतों से लोहा लेना पड़ा। ताकि तुम्हें आराम मिल सके मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।” उसने यों कहानी सुनाई :

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। गाँव के आसपास उसकी बड़ी-सारी ज़मीन थी। क्योंकि वह निस्सन्तान ही मर गया था, इसलिए उसके बन्धुओं ने उस भूमि को आपस में बाँट लिया।

उस किसान की ज़मीन में एक ऐसा भी खेत था, जहाँ खेती न करने के कारण

बेताल कथाएँ



झाड़-झंखाड़ उग आया था। सब उसको 'भूतोंवाला टीला' कहा करते थे। किसान ने वह भूमि कई को खेती के लिए दी, पर कोई भी उसमें कुछ न पैदा कर सका। अगर कोई उस खेत में हल चलाने का साहस भी करता तो बैल रस्सी तोड़कर जुए में से भाग जाते। विदक उठते। सब का यह विश्वास था कि वहाँ भूत थे और वे किसी को खेती न करने देते थे। कई साल तक खेती न हुई थी। इसलिए कई तरह की काँटों की झाड़ियाँ वहाँ उग आईं।

वह भूतोंवाला टीला सबने लेने से इनकार कर दिया। भूत किसान के दूर के सम्बन्धियों में गौरी नाम की एक लड़की थी। उस लड़की की अभी शादी न हुई थी। माँ-बाप भी न थे।

“यदि गौरी को यह ज़मीन दे दी गई तो कोई उस ज़मीन के लालच में ही उस विचारी से शादी कर लेगा। वह दुखिया भी किनारे लग जाएगी। किसान की ज़मीन-जायदाद में उसको भी तो हिस्सा मिलना चाहिए।” बन्धुओं ने कहा। सब इस सुझाव को मान भी गये।

गौरी के होनेवाले पति का निर्णय बहुत दिन पहिले ही हो गया था। उसका नाम था वीरभानु। वह बहुत गरीब था। वह गौरी से विवाह करने के लिए, देश-विदेश में पैसा कमा रहा था। वह उसी दिन वापिस आया। उसे देखकर गौरी बेहद खुश हुई। वीरभानु ने अपनी गठरी में से जेवर-जवाहरात लेकर, गौरी को दिखाते हुए कहा—“गौरी! यह देखो हमारी सम्पत्ति! अब हम शादी करके अपना घर-बार बसा सकते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हम जीवन भर इस

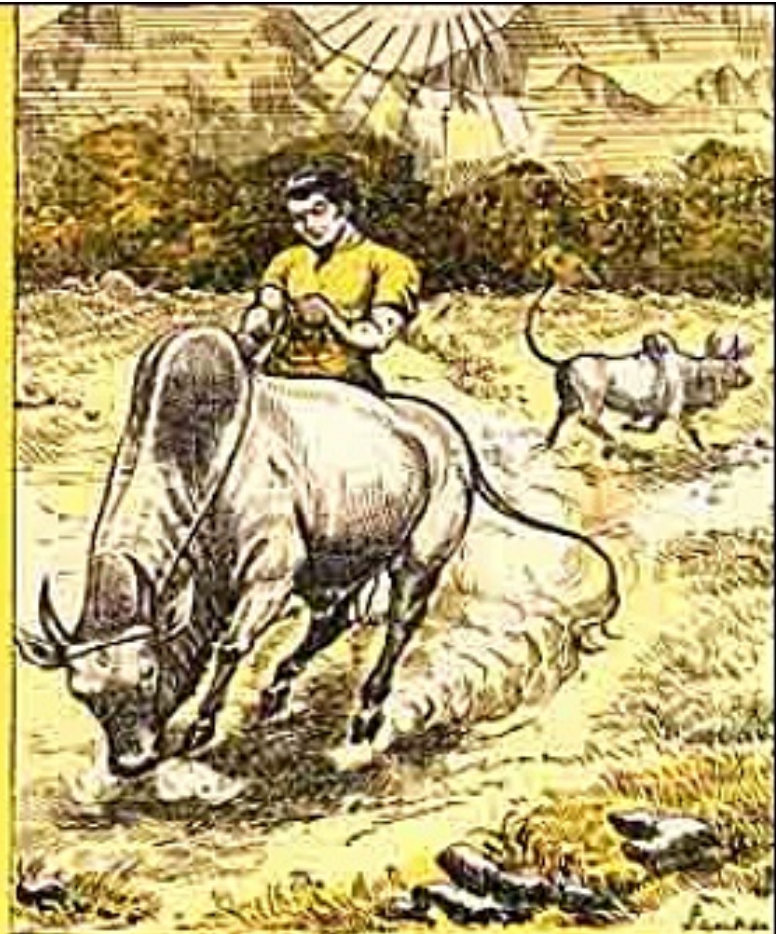
सम्पत्ति पर ही निर्भर रहें। मैं मेहनत करके और कमाऊंगा।”

गौरी खुशी खुशी विवाह के लिए मान गई। उसी समय मरे हुए किसान के एक सम्बन्धी ने आकर कहा—“गौरी! तुम्हारा भाग्य खिल उठा है। ताऊ की ज़मीन-जायदाद में तुम्हें भी हिस्सा देने की सोची है। हमारे बन्धुओं ने निश्चय किया है कि पहाड़ के नीचेवाली सारी ज़मीन तुम्हें दी जाये।” यह कह वह चला गया।

गौरी बड़ी दुखी हुई। वह जान गई कि और सब ने अच्छी भूमि हथियाकर, उसको भूतोंवाला टीला दे दिया था।

वीरभानु न जान सका कि क्यों गौरी रो रही थी। जब उसने भूतों के टीले के बारे में बताया तो उसने कहा—“अरी पगली! भूत हमारा क्या बिगाड़ेंगे? अगर मैं उस टीले पर खेती न करूँ तो मेरा नाम बदल देना।” उसने गौरी को समझाया।

खेती के लिए सब ज़रूरी चीज़ें खरीदीं। जब और खेतों में हल चलाने निकले तो वह भी हल लेकर, भूतों के टीले पर गया। पर उसने हल चलाना शुरू ही किया ही था कि उसे कुछ शोर-



शराबा सुनाई दिया। दोनों बैल बिदककर भाग गये। वीरभानु ने एक बैल को पकड़ना चाहा। पर बैल ने उसे नीचे गिराकर खींचा। उसका सिर एक पत्थर से लगा और सिर से खून निकलने लगा।

पति को, बिना बैलों के, और खून से लथपथ आता देखकर गौरी का माथा ठनका। उसने जोर से चिल्लाते हुए कहा—“क्या मैंने पहिले ही नहीं बताया था! तुम्हें उस कम्बल ज़मीन में पैर ही नहीं रखना चाहिए था! सालों धूमकर पैसा कमाया और यों गँवा दिया।”

“मेरा भूतों ने कुछ नहीं बिगाड़ा है। वह उसके साथ काम करेगी। पर चूँकि बैल ही तो हैं! मैं उस ज़मीन को यों ही छोड़ दूँगा क्या? देखती रहो, क्या क्या करता हूँ।” वीरभानु ने कहा।

जो उसने कहा वही किया। रोज़ अन्धेरे में ही खेत चला जाता, और फिर अन्धेरा होने तक ज़मीन ठीक करता। इस तरह अकेला भला वह कितनी खेती करता? थोड़ी ज़मीन में ही वह धान बो सका। धान बढ़ा हुआ। फसल काटकर वह घर ले गया।

भूतों ने उसे डराना चाहा, पर उसने परवाह नहीं की। गौरी ने भी कहा कि वह उसके साथ काम करेगी। पर चूँकि बैल ही तो हैं! मैं उस ज़मीन को यों ही छोड़ दूँगा क्या? देखती रहो, क्या क्या करता हूँ।” वीरभानु ने कहा।



भाग में भी खेती न कर सका। इस बीच गौरी दो बच्चों की माँ हो गई। माँ के लिए और बच्चों के लिए, वीरभानु, दिन-रात मेहनत करता दस आदमियों का काम अकेला करता।

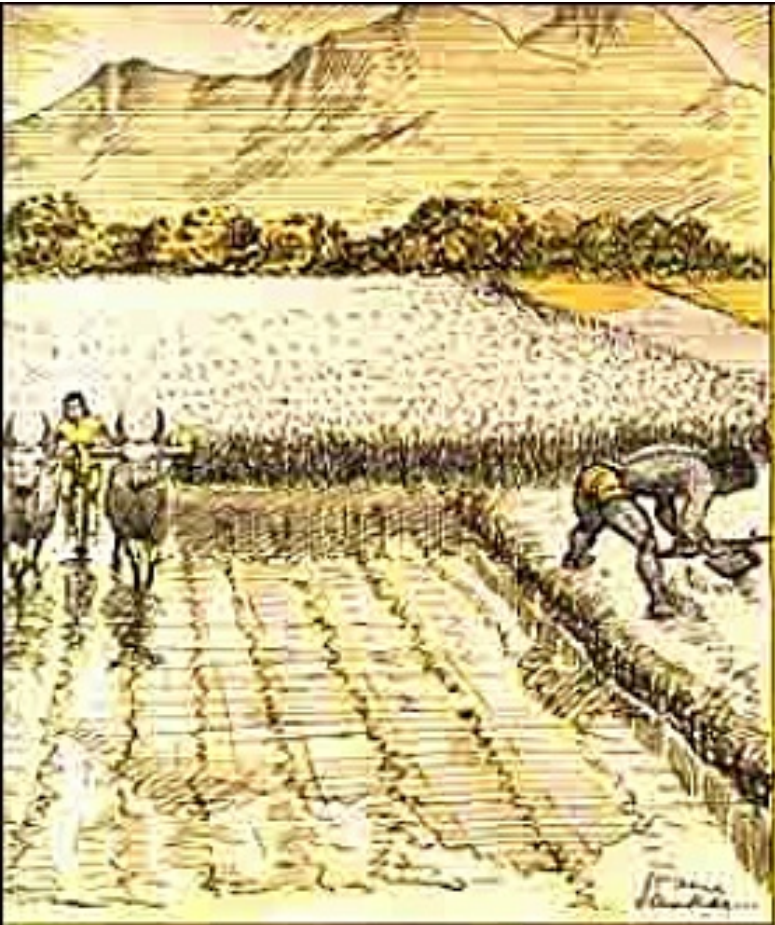
एक दिन जब वह ज़मीन ठीक कर रहा था, तो उसे लगा, जैसे बगल में कोई खड़े होकर कह रहा हो—“क्यों भाई! क्या सारी दुनियाँ कंगाल हो गई है? एक जोड़ी बैल रखकर क्यों नहीं खेत जोतते? क्यों यों खून पसीना एक करते हो?” वीरभानु ने सिर उठाकर देखा। कोई

काला-कल्टा, कढ़ावर, कसरती शरीरवाला आदमी बगल में खड़ा था।

यह सोचकर कि वह कोई भूत होगा, वीरभानु अपना काम करता गया। उसने कोई जवाब न दिया। पर उस काले-कल्टे ने उसे छोड़ा नहीं। “तुम अपनी कठिनाइयों को क्यों नहीं बताते? अगर बन सका तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।”

वीरभानु उस काले-कल्टे के पास गया। उसने जो कुछ गुज़रा था, उसे सुनाया। फिर उसने कहा—“मैं जानता हूँ, तुम कौन हो। मुझे तुम्हारी मदद नहीं चाहिए। जाओ।”





काले-कल्लटे ने कहा—“मुझे खूब पहिचाना है। पर मैं तुम्हारे खेत में रहनेवाला भूत नहीं हूँ। उस पहाड़ पर, जो वहाँ दिखाई दे रहा है, मेरा घर है। मुझे लोग पहाड़ी देवता कहते हैं। तुम्हें देखकर, मुझे भी कुछ समय तक आदमी की तरह जीने की मरज़ी हो रही है। इसलिए तुम मुझे अपने पास मज़दूर रखो।”

“मैं भला तुम्हें मज़दूर कैसे रख लूँ?” वीरभानु ने कहा।

“क्यों डरते हो?” पहाड़ी देवता ने कुतूहलवश पूछा।

वीरभानु को गुस्सा-सा आया। “अच्छा तो सही! मैं तुम्हें मज़दूर रख लूँगा। मैं पहाड़ी कहकर तुम्हें पुकारूँगा। मेरी पत्नी, बाल-बच्चों के सामने तुम्हें आदमी की तरह रहना होगा। अपने कारनामे न दिखाना। अगर तुम यह मानते हो तो काम करो, नहीं तो रास्ता नापो।”

पहाड़ी देवता यह मान गया। पहाड़ी की सलाह पर वीरभानु ने एक जोड़ी बैल और खरीदी। उससे उसने सारे टीले पर हल चला दिया। पहाड़ी बड़ा शक्तिशाली था। भले ही वह कितनी मेहनत करे, वह कतई न थकता। उस साल, भूतों के टीले पर सचमुच सोने की फसल हुई। गाँववाले वीरभानु को देखकर जलने लगे।

एक दिन गौरी, पहाड़ी को घर में बच्चों के संग छोड़ गाँव में किसी रोगी को देखने गई। वीरभानु उससे पहिले किसी काम पर गाँव गया था। जब वह लौटा तो उसे बच्चों का कराहना, रोना-धोना, सुनाई दिया। जब वह अन्दर गया तो बच्चे धान के बड़े टोकरे के पीछे चिछा रहे थे। “बाप रे बाप हाय!” पहाड़ी ठट्ठा मारकर हँस रहा था।

“क्या है ?” वीरभानु ने पूछा ।

“बच्चों के साथ खेल रहा हूँ ।”
पहाड़ी ने कहा ।

“नहीं पिताजी ! यह हमें डरा रहा है ।
वह अपने सिर को भेड़ का सिर, शेर
का सिर बनाकर दिखा रहा है ।” बच्चों
ने कहा ।

वीरभानु ने बच्चों को समझा-बुझाकर
पहाड़ी से कहा—“चल बाहर, फिर मुझे
अपना मुँह न दिखाना, जा ।” वह पहाड़ी
को बाहर धकेलकर ले गया । पहाड़ी
चुपचाप बाहर चला आया । बाहर आकर
उसने पूछा—“क्यों जाऊँ ?”

“अब तू मेरे नीचे काम नहीं कर
सकता ।” वीरभानु ने कहा ।

“क्या मेरे बगैर तुम उस सारी ज़मीन
में खेती कर सकते हो ?” पहाड़ी ने पूछा ।

“जितना हो सकेगा, उतना ही करूँगा ।
पहिले तू जा ।” वीरभानु ने कहा ।

“मैं नहीं जाऊँगा । कर ले, जो तू
करना चाहता है ।” पहाड़ी ने कहा ।

अगले क्षण, वीरभानु उससे भिड़ पड़ा ।
दोनों काफ़ी देर तक लड़ते रहे । जैसे
तैसे वीरभानु ने पहाड़ी को पछाड़ दिया ।



उसकी छाती पर जा बैठा । उसे खूब
पीटा । पहाड़ी अट्टहास करने लगा ।
उसको हँसता देखकर वीरभानु को और
भी गुस्सा आया । “तुझे हँसी आ रही
है ? मार अभी काफ़ी नहीं पड़ी है क्या ?”
उसने एक बार और मारा ।

“बस बस ! तुम ही जीते, मुझे उठने
दो ।” पहाड़ी ने कहा ।

पहाड़ी खड़ा होकर, हँसता हुआ
बोला—“मैंने तुम जैसा आदमी कहीं
नहीं देखा है । मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार
चला जाता हूँ । अब तुम अपनी ज़मीन

खुद जोतो। अगर कभी भूत तुम्हें सताये तो “पहाड़ी” कहकर पुकारना। मैं तुरत आकर उनकी खबर लूँगा।” वह खड़ा खड़ा कहीं गायब हो गया।

उसके बाद वीरभानु को कोई भूत न सता सका। उसकी ज़मीन, गाँव की सबसे अच्छी ज़मीन बन गई। गौरी, परिवार के साथ वह आराम से रहने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—
“राजा! मुझे एक सन्देह हो रहा है। पहाड़ी देवता का, वीरभानु के पास मज़दूरी करने का क्या कारण था? और जब वह काम कर रहा था तो उसने अपने मालिक का क्यों विरोध किया? वीरभानु आखिर आदमी ही तो था। वह एक देवता को कैसे हरा सका? अगर तुमने इन प्रश्नों का जान वृक्षकर जवाब न दिया, तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।”

“वीरभानु की, भूतों से मदद करने के लिए ही पहाड़ी देवता उसके पास मज़दूरी करने आया था। उसकी मदद से वीरभानु की हालत सुधर भी गई थी। यह जानने के लिए कि वीरभानु को बच्चों पर अधिक प्रेम है या धन पर, उसने वीरभानु को मुस्सा दिलवाया। यह जानते हुए भी कि उसके चले जाने पर उसका नुकसान न होगा, उसने इसकी परवाह न की। यही नहीं, भूतों के राजा, पहाड़ी देवता से वह मिड़ भी पड़ा। यह देख पहाड़ी को सन्तोष हुआ और वह अपनी हार मान गया। यही बात है। सच पूछा जाये तो उसने पहाड़ी देवता को नहीं हराया था।” विक्रमार्क ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन-भंग होते ही, बेताल शव के साथ अन्तर्धान हो गया और पेड़ पर जा बैठा।





विचित्र - व्यापार

ईरान देश के एक नगर में एक व्यापारी रहा करता था। व्यापार में उसे नुकसान हुआ, और उसे पैसे की तंगी होने लगी। उसने एक महाजन से सौ दीनारें माँगीं। उसने यह भी कहा कि वह उसे मुँहमाँगा सूद देगा। महाजन को भय था कि कहीं सूद के फेर में मूल धन ही न मिले, इसलिए उसने उधार देने से इनकार कर दिया। परन्तु व्यापारी ने ज़िद पकड़ी कि उसे चाहे कुछ भी हो, उधार देना ही पड़ेगा।

“मुझे तेरा सूद नहीं चाहिए। अगर तूने ठीक समय पर रुपया न दिया तो तेरे शरीर से सेर-भर माँस कटवा लूँगा। मेरे लिए यही काफी है। बोलो क्या यह मंजूर है?” महाजन ने पूछा।

“मैं उसके लिए भी तैयार हूँ। मैं इस पूँजी से व्यापार करूँगा और व्यापार करके

समय से पहिले ही तुम्हारा उधार चुका दूँगा।” व्यापारी ने कहा।

महाजन ने लिखा-पढ़ाकर, एक दस्तावेज़ पर व्यापारी के दस्तखत करवा करके, उसको सौ दीनारें दे दीं। व्यापारी उस धन से माल खरीदकर व्यापार करने निकला। व्यापार में उसे लाभ हुआ। व्यापारी ने अपने लाभ में से सौ दीनारें अलग कर अपनी पत्नी के पास भेजीं। उसके पास यह ख़बर भी भिजवाई—“ये सौ दीनारें महाजन को देकर उसका उधार चुका देना। भूलना नहीं।”

व्यापारी की पत्नी शर्त के बारे में न जानती थी।—“ऋण फिर कभी चुकाया जा सकता है। यह धन घर के खर्च के लिए चाहिए।” उसने वह पैसा खर्च कर दिया। व्यापारी कुछ दिनों बाद, खूब



व्यापारी ने महाजन को, जो कुछ गुजरा था, सब बता दिया। परन्तु महाजन ने उसका विश्वास न किया।—
“चाहे कुछ भी हुआ हो, मुझे मेरा पैसा वापिस कर दो। अगर तेरे पास पैसा न हो तो सेर भर माँस ही काटकर ले लूँगा।” महाजन ने कहा।

व्यापारी बहुत गिड़गिड़ाया। पर उसका महाजन पर कोई असर न हुआ। महाजन और व्यापारी मिलकर, एमेस्सा नगर के काजी के पास फ़ैसला करने की फ़रियाद करने निकले।

रास्ते में उन्हें एक खच्चर दिखाई दिया। वह उनकी ओर ही भागा आ रहा था। उसका मालिक उसके पीछे भाग रहा था। उन दोनों को सामने से आते हुए देखकर खच्चर के मालिक ने कहा—“ज़रा उसे रोकिये। रोकिये तो सही।”

व्यापारी ने एक पत्थर लेकर खच्चर पर मारा। पत्थर खच्चर की आँख पर लगा और उसकी आँख फूट गई। खच्चर का मालिक व्यापारी से झगड़ने लगा।—“यह कीमती खच्चर है। और तू ने उसकी आँख फोड़ दी है। मेरा नुक़सान किया है

फ़ायदे के साथ घर के लिए लौटा। रास्ते में उसे डाकुओं ने लूटा। उसके पास सिवाय पहिने हुए कपड़ों के, कुछ न छोड़ा। फिर भी व्यापारी को ख़ास फ़िक्र न थी। क्योंकि वह इस ख़्याल में था कि उसकी पत्नी ने महाजन का ऋण चुका ही दिया होगा।

घर आने पर ही व्यापारी को पता लगा कि वह किस हालत में था। महाजन का उधार चुकाया नहीं गया था। उसे चुकाने के लिए उसके पास धन भी न था। निश्चित समय भी गुज़र चुका था।

तूने । हरजाना दे दे । वरना यहाँ से हिलने नहीं दूँगा ।”

“तुम्हें इस आदमी को रोकने का हक नहीं है । तुम से पहिले इसका मुझ पर कर्ज है । हम काजी के पास जा रहे हैं । चाहते हो तो तुम भी हमारे साथ आओ और काजी से शिकायत करो ।” महाजन ने उससे कहा ।

खच्चर का मालिक भी उनके साथ एमेस्सा नगर की ओर चला ।

अगले दिन रास्ते में उन्हें एक दृश्य दिखाई दिया । एक गधा, जिसकी पीठ पर सानान लदा हुआ था, दलदल में फँसा हुआ था और निकल नहीं पा रहा था । उसका मालिक अकेला कुल न कर पाता था । उसने इन तीनों की मदद माँगी । तीनों गधे को दलदल में से निकालने लगे । महाजन और खच्चर का मालिक गधे पर लदे सामान को दोनों तरफ से खींचने लगे । अभागा व्यापारी गधे की पूँछ पकड़कर जोर से खींचने लगा । और गधे की पूँछ टूटकर उसके हाथ में आ गई ।

“तूने मेरे गधे की पूँछ तोड़ी है । तूने मेरा नुकसान किया है । हरजाना



देकर ही आगे चल ।” गधे के मालिक ने कहा ।

औरों ने उसे भी काजी के पास आने के लिए कहा ।

चारों जल्दी ही एमेस्सा नगर पहुँचे । राज पथ पर उन्हें एक बड़ा आदमी, गधे पर सवार होकर जाता दिखाई दिया । देखने में वह कोई बड़ा राज-कर्मचारी लगता था । पर उसने शराब इस तरह पी रखी थी कि इधर उधर झूम रहा था । गिरने को था । पूछने पर मालूम हुआ कि वह एक बड़ा सरकारी निरीक्षक था ।

थोड़ी दूर जाने के बाद वे एक मसजिद के पास आये। वहाँ सैकड़ों आदमी इकट्ठे होकर जुआ खेल रहे थे।

थोड़ी दूर जाने के बाद उन्होंने देखा कि एक आदमी को कब्रिस्तान ले जाया जा रहा था। वह व्यक्ति हाथ-पैर हिलाते, आते जाते लोगों से कह रहा था—“भाइयों! आप ही बताइये। ये लोग मुझे मरा जान कर गाड़ने ले जा रहे हैं। क्या मैं मर गया हूँ?” वह यह कहकर कराह रहा था।

“हाँ! तू मर गया है!” आते जाते लोग उससे कहते जा रहे थे।

इन विचित्र दृश्यों को चारों ने देखा। उस दिन रात को उसी शहर में ठहरकर, अगले दिन सवेरे वे काजी के सामने हाज़िर हुए।

“एक एक करके अपनी अपनी क्रियाद करो।” काजी ने कहा।

“हुज़ूर इस व्यापारी ने मेरे पास से सौ दीनारें लेकर, मुझे यह दस्तावेज़ लिखकर दिया है। निश्चित समय पर इसने उधार न चुकाया तो मैं इसके शरीर से एक सेर मांस काटकर ले सकता हूँ। निश्चित समय कभी का गुज़र चुका है। इसने अभी तक



मेरा कर्ज नहीं चुकाया है। जब मैंने मांस काटकर लेना चाहा तो कहता है कि वह कानून के विरुद्ध है।” महाजन ने कहा।

काजी ने दस्तावेज पढ़कर कहा—
“इस शर्त के अनुसार, इससे तेरा एक सेर मांस लेने का पूरा अधिकार है। तुम अपना चाकू लेकर तेज कर लो।”

व्यापारी पसीना पसीना हो गया।
उसके हाथ-पैर ठण्डे हो गये।

चाकू तेजकर, महाजन को मांस काटने के लिए तैयार खड़ा देखकर काजी ने कहा—“तुम्हें सिर्फ एक सेर मांस लेने

का हक है। अगर तूने उससे एक माशा अधिक या कम लिया तो वह इस शर्त के खिलाफ होगा। अगर तूने कानून के विरुद्ध कुछ किया, तो तुम्हें फाँसी पर चढ़वा दूँगा।”

महाजन को काटो तो खून नहीं। “पर यह कैसे किया जा सकता है?” उसने पूछा।

“तुमने ऐसी शर्त क्यों लिखवाई, जिसका पूरा करना मुश्किल था। चाहते हो तो अपना सेर भर मांस लेलो। नहीं तो, इस आदमी को सताकर तुम इतनी दूर लाये हो, इसके लिए तुम्हें दो सौ दीनारें उसको





हरजाने के तौर पर देनी होगी।”—
काजी ने कहा।

महाजन करता तो क्या करता? उसने
काजी के सामने दो सौ दीनारें रख दीं।

फिर खच्चर के मालिक ने अपने नुक़सान
के बारे में शिकायत की। “हुज़ूर, खच्चर
की कीमत हजार दीनारें हैं। इस व्यापारी
ने उसकी आँख फोड़कर उसकी कीमत कम
कर दी है। आप ही इन्साफ़ कीजिये।”

“इसके लिये मेरे तक आने की क्या
ज़रूरत थी? एक आरा मँगवाओ। अपने
खच्चर को आधा काटो। अच्छी आँखवाला

हिस्सा तुम ले लो। अन्धी आँखवाला
भाग उसे दे दो और ५०० दीनारें,
वसूल कर लो।”

यह फैसला सुन, खच्चर का मालिक
हैरान रह गया। उसने कहा—“अब
भी मेरे खच्चर की कीमत कम से कम ९००
दीनार से कम न होगी। मुझे हरजाना
वरजाना कुछ नहीं चाहिए। मुझे जाने
दीजिये।”

“क्योंकि तुम व्यर्थ इस व्यापारी को
अदालत तक खींचकर लाये हो, इसलिए
तुम्हें इसको सौ दीनारें देनी होगी।”
काजी ने धमकाकर कहा।

खच्चर के मालिक ने, काजी के सामने
सौ दीनारें रखीं।

फिर गधे के मालिक ने सामने आकर
शिकायत की कि व्यापारी ने गधे की पूँछ
तोड़ दी थी।

काजी ने सब सुनने के बाद कहा—
“यह असम्भव है। मुझे विश्वास नहीं होता
कि इस आदमी के खींचने से तेरे गधे की
पूँछ उखड़ गई है। देखो, सामने मेरा
गधा खड़ा है। तुम उसकी पूँछ तोड़
कर दिखाओ। जाओ।”

फरियादी ने काजी के गधे की पूँछ खींचकर देखी। गधे ने उस पर दुलती जमाई। उसके मुँह पर चोट लगी। इस प्रकार उसने तीन बार कोशिश की और तीनों बार उसे दुलती खानी पड़ी। फरियादी से काजी ने कहा—“देखा? हो सकता है कि तेरे गधे की पूँछ ही न हो। तू इस आदमी पर झूठी शिकायत कर रहा है। इसलिए मैं तुझ पर सौ दीनारों का जुर्माना लगाता हूँ।”



न्याय के लिए आये थे, खुद पैसा देना पड़ा। फरियादी निराश चले गये। उनकी दी हुई दीनारों में से काजी ने आधी अपनी जेब में रख ली और आधी व्यापारी को दे दी। “मैं अन्याय बिल्कुल नहीं सह सकता। मैं समझता हूँ कि तुम्हें मेरा फ़ैसला न्याय-संगत लगा होगा।” काजी ने कहा।

“जी, जी, हुजूर! मैं आपसे दो चार बातें पूछना चाहता हूँ। क्या कृपया आप मेरा सन्देह निवारण कर सकेंगे?” व्यापारी ने पूछा।

“पूछो। क्या हैं तुम्हारे सन्देह?” काजी ने सस्नेह पूछा।

“हम आ रहे थे कि हमें एक राज्य का एक निरीक्षक नशे में चूर, गधे पर जाता हुआ दिखाई दिया। उतने बड़े कर्मचारी को उस हालत में देखकर मुझे अचरज हुआ। इसका क्या कारण है?”

“इस नगर में शराब की कई दुकानें हैं। दूकानदार, पैसे के लालच में शराब में मादक द्रव्य मिलाते हैं। वे ऐसा न करें, यह देखना निरीक्षक का काम है। इसलिए हर दुकान में जाकर वह थोड़ा थोड़ा शराब चखता है। क्योंकि वह मिलावट की शराब चखता है, इसलिए

वह जल्दी नशे में झुबने लगता है। इस बारे में कुछ नहीं किया जा सकता।" काजी ने कहा।

"मस्जिद में क्यों जुआ खेला जा रहा है?" व्यापारी ने पूछा।

"वह भी कानून के अनुसार हो रहा है। सच बात तो यह है कि मस्जिद के पास पैसा नहीं है। इसलिए हमने उसमें जुआ खेलने की अनुमति दे दी है। जो कुछ पैसा जुआ से मिलेगा, उससे मस्जिद की मरम्मत की जायेगी।" काजी ने कहा।

"एक आदमी को जीते जी ही क्यों कब्रिस्तान ले जा रहे थे? वह कहता है कि वह ज़िन्दा है। और सब कह रहे थे कि वह मर गया है! क्या अचरज की बात है!" व्यापारी ने पूछा।

"वह कानून के विरुद्ध बातें कर रहा है। दो महीने पहिले उसकी पत्नी ने

मेरे पास आकर कहा कि उसका पति मर गया है। उसने मुझ से दुबारा शादी करने की अनुमति माँगी। मैंने गवाही के बल पर अनुमति दे दी। फिर उसके पति ने आकर कहा कि वह ज़िन्दा है। इसलिए उसको उसकी पत्नी वापिस मिलनी चाहिए। कानून के अनुसार मैं अपने दिये हुए फैसले को नहीं बदल सकता। इसलिए, वह भूत है, यह साबित करने के लिए, मैंने यह हुकुम दे दिया कि उसे गड़वा दिया जाये। यही बात है।" काजी ने कहा।

काजी के फैसले सुनकर व्यापारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि उसके फैसले के कारण ही वह मौत से बचा था, इसलिए उसने कुछ न कहा और चुपचाप घर वापिस चला गया और खुशी खुशी अपना कारोबार करने लगा।



भेदोपाय

एक गाँव में भीमलाल नाम का एक किसान था। उसने एक साल अपने खेत में ईख बोयी। वह काफी बढ़ गई। उस गाँव के जमीन्दार का एक लड़का था। पुरोहित और साहुकार के लड़के उसके दोस्त थे। वे एक दिन रात में भीमलाल के खेत में गन्ने खाने गये। भीमलाल ने उन तीनों को खेत में गन्ने तोड़ते देखा। पर वे तीन थे और वह अकेला था। क्या करता? भीमलाल को झट एक उपाय सूझा। जमीन्दार के लड़के से उसने कहा—“बाबू! आप जमीन्दार के लड़के हैं और ये पुरोहित के लड़के हैं, आप पेट भर खाइए; परन्तु व्याज पर व्याज माँगनेवाले इस साहुकार के लड़के का यहाँ क्या काम है?”

“हाँ....उसे मार कर भगा दे।”—जमीन्दार के लड़के ने कहा।

भीमलाल ने साहुकार के लड़के को लाठी से जो मारा तो वह नौ दो ग्यारह हो गया। पुरोहित के लड़के को लाठी दिखाकर उसने कहा—“जमीन्दार के लड़के के साथ इस भीख माँगनेवाले ब्राह्मण का क्या काम?”

“हाँ....इसे मार कर भगा दे।”—जमीन्दार के लड़के ने कहा। भीमलाल ने अभी लाठी उठाई भी न थी कि पुरोहित का लड़का रफ़ चकर हो गया। तब भीमलाल ने जमीन्दार के लड़के से कहा—“अगर तू जमीन्दार का लड़का है तो मुझे क्या! यहाँ खाने के लिए गन्ने कोई मुफ्त नहीं हैं।” उसके यह सुनते ही जमीन्दार का लड़का हरिण की तरह चौकड़ियाँ भरने लगा।





स्वयं प्रभा

गिरिदुर्ग नाम का एक नगर था। उस नगर के राजा का नाम इन्दुमित्र था। उसके बहुत दिनों बाद एक लड़की पैदा हुई। उस लड़की का नाम स्वयंप्रभा रखा गया। वह छुटपन से ही तपस्या करके मोक्ष प्राप्त करना चाहती थी।

स्वयंप्रभा जब बड़ी हुई, तब उसके माँ-बाप ने सौ राजकुमारों के चित्र मँगवाकर, उनमें से एक को चुनकर अपना पति निश्चय करने के लिए कहा। परन्तु स्वयंप्रभा ने कहा कि मैं विवाह ही न करना चाहती।

इसके कुछ दिनों बाद, वीणावती नाम की प्रसिद्ध गायिका गिरिदुर्ग आई। वीणावती के पास एक अपूर्व वीणा थी। राजाओं के समक्ष उस वीणा को बजाकर, वह ईनाम पाती देश का भ्रमण कर रही थी।

स्वयंप्रभा के मनोरंजन के लिए वीणावती के संगीत का आयोजन किया गया। वीणावती, कोई प्रणय-राग गाने लगी। उसे सुनते ही स्वयंप्रभा को गुस्सा आया, उसने कहा—“क्यों नहीं कोई भक्ति रस का गीत गाती हो!” उसे इतना क्रोध आया कि उसने वीणा को लात मार दी। वीणा के दो टुकड़े हो गये।

सात पीढ़ियों से, वह वीणा उसके घर में चली आती थी। उस वीणा को टूटा देखकर, वीणावती को बहुत दुःख हुआ। “इस तरह की वीणा मुझे कहीं न मिलेगी। इसकी सहायता से मैंने कितने ही राज-दरबारों में ईनाम पाया है। वस, अब इसके साथ मेरा संगीत भी खतम हो गया है। बताइये मैंने क्या कसूर किया है? आपने यह अन्याय क्यों किया है?”

वीणावती यह कह कर रोने लगी। स्वयंप्रभा को पश्चात्ताप होने लगा।

उसने अपने गले का रत्नहार वीणावती को देते हुए कहा—“यह हार भी हमारे वंश में सात पीढ़ियों से चला आ रहा है। बहुत कीमती है। इसलिए इसे लेकर तसल्ली कर लो।”

वीणावती, राजकुमारी से वह रत्नहार लेकर दूटी हुयी वीणा को उठाकर अपने रहने की जगह गई। उसे उस नगर में रहने की इच्छा न हुयी। वह उसी दिन उस नगर को छोड़कर किसी और देश को चली गई। वह रास्ते में, प्रति राजधानी में रुकती, दरबार में, दरबारी वीणा बजाती, और ईनाम पाती। परन्तु उस वीणा पर वह सन्तोष न मिलता, जो उसको अपनी वीणा पर मिलता था।

इस प्रकार जाती जाती वह एक दिन कालीगुप्त नाम के नगर में पहुँची। वहाँ सराय में ठहरी। शाम को चित्रशाला देखने गई। चित्रशाला में कई चित्र थे। एक चित्र में, एक पुरुष वीणा बजा रहा था। वह पुरुष बहुत सुन्दर था। परन्तु वीणावती को आकर्षित किया उसकी वीणा ने ही।



वह ठीक उसकी दूटी हुयी वीणा की तरह ही थी।

वह उस चित्र को देखकर अचरज कर रही थी। उसने चित्रशाला के सैनिकों से पूछा—“यह चित्र किसका है?”

“यह हमारे राजा के चौथे पुत्र सहदेव का है।” उन्होंने जवाब दिया।

यह पता लगते ही वीणावती के मन में एक इच्छा पैदा हुयी। वह राजकुमार को अपने संगीत से खुश करके उस वीणा को ईनाम में पाना चाहती थे। यही उसकी इच्छा थी। वह तुरत सहदेव का घर



खोजने निकली। उससे मिलकर उसने उन्हें संगीत सुनाने की अनुमति माँगी।

सहदेव ने अनुमति दे दी और अपनी वीणा लेकर उसके सामने रख दी। वीणा के जब वह तार ठीक कर रही थी तो वीणावती बहुत ही आनन्दित हुयी। वह ठीक उसकी वीणा की तरह थी। उसने उस आनन्द में बहुत अच्छी तरह गाया।

उसका संगीत सुनकर सहदेव बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने वीणावती से पूछा कि वह क्या इनाम चाहती थी। वीणावती ने



स्वयंप्रभा के बारे में कहा और बताया कि उसने कैसे उसकी वीणा तोड़ दी थी। उसने अपनी टूटी वीणा दिखाकर कहा—“इस वीणा से पहिले और वीणाओं पर मुझे ऐसे लगता था जैसे मेरा हाथ टूट गया है। कृपया मुझे यह वीणा दिलवाइये।”

सहदेव ने वीणावती की वीणा को देखा। “मैं इस वीणा को फिर जोड़कर तुझे दे दूँगा। आप फिक्र न करें।” उसने कहा। उस दिन, रात भर वह वीणा ठीक करता रहा। जब वीणावती अगले दिन आई तो उसने वह वीणा उसे दे दी। बहुत ध्यान से देखने पर भी, वीणा में कहीं जोड़ न दिखाई देता था। राजकुमार की कारीगरी की प्रशंसा में वीणावती ने उसे रत्नहार देते हुए कहा—“इसको मैंने अपनी वीणा के बदले में स्वयंप्रभा से लिया था। क्योंकि आपने मेरी वीणा को ठीक किया है, इसलिए इस हार को आप अपने पास रखिये।”

वीणावती के चले जाने के बाद सहदेव स्वयंप्रभा के बारे में सोचने लगा। वीणावती ने उसे बता दिया था कि स्वयंप्रभा बहुत सुन्दर थी, परन्तु उसके मन में वैराग्य था।



जैसे भी हों, सहदेव ने, स्वयंप्रभा को अपनी पत्नी बनाना चाहा।

इस बीच, इन्दुमित्र जान गया कि उसकी लड़की के गले में हार न था। सारा वृत्तान्त जानकर वह बड़ा चिन्तित हुआ। उसके घराने में सात पीढ़ियों से चलती आई उस माला का विशेष महत्व था। जो कोई उसे पहिनेगा, वह ही गिरिदुर्ग का राजा होगा। स्वयंप्रभा यह न जानती थी। इसलिए, उसने उसे वीणावती को दे दिया था। राजा पागल सा हो गया। उसने अपने सैनिकों को वीणावती को पकड़कर लाने के लिए कहा।

सैनिक, हर किसी से पूछते पूछते, कुछ दिनों बाद वीणावती को पकड़ सके। उसने उनके साथ जाकर, राजा इन्दुमित्र से कहा—“महाराज! आपकी लड़की ने जो हार मुझे दिया था वह अब मेरे पास नहीं है। कालीगुप्त नगर के राजकुमार, सहदेव ने मेरी वीणा ठीक करके मुझे वापिस दी और मैंने उनको वह माला दे दी।” वीणावती ने सारी कहानी सुनाई।

महाराजा ने तात्कालिक रूप से वीणावती को जेल में डलवा दिया और अपने



सैनिकों को कालीगुप्त नगर भेजा। थोड़े दिनों में वापिस आकर उन्होंने कहा—“महाराज! मालूम हुआ है कि राजकुमार सहदेव कालीगुप्त नगर में नहीं हैं। कोई नहीं जानता कि वे कहाँ गये हैं।”

रत्नमाला न मिल सकी थी, इसलिए राजा की चिन्ता और भी बढ़ गई। इतने में उन्हें एक खबर मिली कि नगर से बाहर, रत्नगिरि पहाड़ पर, मन्दिर में अद्वैत शिवानन्द योगी आकर तपस्या कर रहे थे। वे तुरन्त, अपने दरबारियों सहित योगी को देखने गये।

वह योगी और कोई न था, सिवाय के विवाह के बारे में भी चिन्ता कर रहे कालीगुप्त के राजकुमार सहदेव के। वह हो। उसके विवाह का शुभ मुहूर्त भी दूर जैसे भी हो, स्वयंप्रभा से विवाह करने के नहीं है। तुम सुखपूर्वक रहो।" लिए, यह कपट वेष बनाकर आया था। राजा को ऐसा लगा जैसे उस पर से यह कोई न जानता था। कोई भारी बोझ उठा दिया गया हो।

राजा ने आकर उसको नमस्कार किया। "महात्मा! मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। योगी वेष धारण किये हुए सहदेव ने मेरी लड़की बिल्कुल विवाह नहीं करना कहा—“राजा! मैंने अपनी दिव्य-दृष्टि चाहती। आप ऐसी कृपा कीजिये कि से ज्ञान लिया है, तुम क्यों आये हो! उसका मन बदल जाये।” राजा ने उससे तुम्हारी लड़की ने जो रत्नहार खो दिया प्रार्थना की। फिर वह अपने घर चला गया। है, वह उसके पास फिर पहुँच जायेगा। उसने अपनी लड़की को बुलाकर कहा— तुम चिन्ता न करो। तुम अपनी लड़की “बेटी! रत्नगिरि पर एक महायोगी आये



हुये हैं। उनकी शक्ति, सिद्धि अद्भुत है।
तुम एक बार जाकर उनके दर्शन क्यों
नहीं कर आती हो?"

यह जानते ही स्वयंप्रभा ने योगी को
देखकर, उनका उपदेश सुनना चाहा। वह
हेमा नाम की सहेली के साथ रत्नगिरि पर
गई। उसने योगी के सामने साष्टांग किया।

तब सहदेव ने उससे कहा—
“राजकुमारी! हम तुम्हारी इच्छा जानते हैं।
तुमने अनजाने एक रत्नहार एक गायिका को
दिया है। उसके वापिस न मिलने पर तुम
दुखी हो रही हो। क्यों?"

“स्वामी! उस हार के कारण मेरे
पिता ने उस गायिका को जेल में डाल रखा
है। कम से कम उसकी विमुक्ति के लिए
मुझे वह हार दिलवाइये।”—स्वयंप्रभा
ने कहा।

सहदेव ने आँखें बन्द कर लीं। कमण्डल
में हाथ रखकर, रत्न-हार को बाहर निकाल
कर, स्वयंप्रभा के हाथ में रखते हुए कहा—
“यह लो, तुम्हारा रत्नहार। इसे अपने
पिता को देकर, उसको कारावास से मुक्त
करो। तुम्हारा जल्दी ही विवाह होगा।
यह हमारा आशीर्वाद है।”





यह सुनते ही स्वयंप्रभा को योगी पर सन्देह होने लगा। “स्वामी! आपने तो सब कुछ छोड़कर सन्यास लिया है। फिर विवाह क्यों?”—स्वयंप्रभा ने पूछा।

“पगली! हम तुम्हारी रक्षा करने के लिए विवाह करेंगे। अगर तुम नहीं चाहती हो तो छोड़ दो।”—सहदेव ने कहा।

स्वयंप्रभा की सहेली हेमा ने सलाह दी कि योगी का कहना मानना अच्छा था। नहीं तो किसी राजकुमार से शादी करनी पड़ेगी और दुनियाँ भर के पाप करने होंगे। आखिर स्वयंप्रभा अद्वैत शिवानन्द से शादी करने के लिए मान गई।

उन दोनों का तभी विवाह भी हो गया। स्वयंप्रभा अपनी सहेली हेमा के साथ घर चली गई। क्योंकि उसका काम पूरा हो गया था, सहदेव भी अपना कपट वेप उतारकर अपने राज्य को वापिस चला गया।

रत्नगिरि के मन्दिर के पुजारी का माधवस्वामी नान का एक दामाद था। मन्दिर में पहिले राजा का आना, फिर राजकुमारी का आना उसने देखा। उसने सहदेव को गेरुआ वस्त्र, झूटी दाढ़ी-मूँछ फेंककर, जाते हुए भी देखा।

स्वयंप्रभा विवाह का नाम सुनते ही हैरान हो उठी। उसने कहा—“स्वामी! मैं विवाह करना नहीं चाहती। मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये कि मैं इस भवसागर से तर जाऊँ। विवाह के लिए पिताजी मुझे तंग कर रहे हैं। आप ही कोई रास्ता बता सकेंगे, इस आशा से आई हूँ।”

“तुम्हारा विवाह होकर रहेगा। अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारा वैराग्य खराब न हो, तो उसका एक ही रास्ता है। वह यह कि तुम मुझ से विवाह करो।”—सहदेव ने धीमे से कहा।





वह जान गया कि शिवानन्द योगी कपटी था।

तुरत माधवस्वामी ने गेरुआ वस्त्र, दाढ़ी मूँछ पहिन ली और तपस्वी की तरह बैठ गया। वह इस आशा में था कि राजा फिर आएँगे। उसकी आशा पूरी भी हुई।

जब राजा को मालूम हुआ कि योगी की कृपा के कारण उसकी लड़की को रत्नहार मिल गया है, वह शिवानन्द योगी के दर्शन के लिए गया। उसने योगी को रत्नों से जड़ी रुद्राक्ष माला समर्पित की। राजा यह न जान सका कि वह योगी वह न था, जिसको उसने पहिले देखा था। माधवस्वामी बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने सोचा कि उसे बहुत-से ईनाम मिलेंगे।

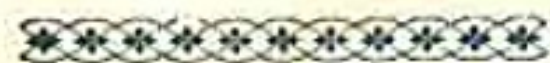
क्योंकि योगी के कहने से रत्नहार मिल गया था, इसलिए राजा को विश्वास हो गया कि स्वयंप्रभा का विवाह भी जल्दी हो जायेगा। उसने विवाह की तैयारी करनी शुरू कर दी। यह देख स्वयंप्रभा ने अपने पिता से कहा कि उसकी शादी शिवानन्द योगी से पहिले ही हो गई थी। पहिले तो राजा को बहुत निराशा हुई। फिर उसने अपने को समझा कर पूछा—“यह



बात पहिले ही मुझ से क्यों नहीं कही थी? मैं अब तुम दोनों का बड़े धूमधाम से विवाह करूँगा।”

स्वयंप्रभा के विवाह के निमंत्रण पत्र देश-विदेश भेजे गये। राजबन्धु, वाद्यों के साथ आकर, रत्नगिरी से कपटी शिवानन्द योगी को राजमहल में ले गये। यह जानकर कि उसका राजकुमारी के साथ विवाह होने जा रहा है, माधवस्वामी की अक्ल चकरा गई।

स्वयंप्रभा की तरफ से हेमा दुल्हे को देखने आई। यह जानकर कि वह असली



शिवानन्द योगी नहीं है, उसने यह बात स्वयंप्रभा और उसकी सहेली से कह दी।

उन सबने आकर माधवस्वामी को घेर लिया और हँसी-मज़ाक में उसकी दाढ़ी मूँछ उखाड़ कर फेंक दी। उसकी पोल खुल गई।

राजा यह सुनकर आग बबूला हो उठा। उसने कपटी योगी को बुलाकर पूछा—“नीच, तुम कौन हो? सच कहो। नहीं तो सूली पर चढ़वा दूँगा। असली शिवानन्द योगी कहाँ है?”

“महाप्रभु! क्षमा कीजिये, आप जिसे असली शिवानन्द योगी समझ रहे हैं, वह भी नकली है। मैंने उसकी पोशाक, दाढ़ी, मूँछ पहिन रखी थी। मुझे छोड़ दीजिये।” माधवस्वामी गिड़गिड़ाया।

राजा को कुछ न सूझा। उसे कोई ऐसा उपाय न सूझा, जिससे उस योगी को

मालूम किया जा सके, जिसने स्वयंप्रभा के साथ विवाह किया था।

इस बीच, सहदेव को स्वयंप्रभा के विवाह का समाचार मिला। यह अनुमान कर कि शिवानन्द योगी का वेष धारण कर, कोई और राजकुमारी से शादी कर रहा था, वह तुरत गिरिदुर्ग पहुँचा। सहदेव महाराज से मिला। उसे सारी बात बता दी। माधवस्वामी ने भी सहदेव को पहिचान कर बताया कि उसीने शिवानन्द योगी का ढोंग रचा था। हेमा और स्वयंप्रभा ने भी उसको पहिचान लिया। यह जानकर कि सहदेव ने उसको पाने के लिए ही इतना ढोंग रचा था, स्वयंप्रभा उससे विवाह करने के लिए मान गई। राजा भी यह जानकर सन्तुष्ट हुआ कि उसका दामाद राजकुमार ही था। सहदेव और स्वयंप्रभा की धूमधाम से शादी हुयी।





मित्र-भेद

नील रंग में रंगा स्यार वह
जब पहुँचा जंगल के बीच,
मचा तहलका उस क्षण भारी
वन के सब जीवों के बीच ।

रंग अनोखा लखकर उसका
लगे भागने हो वे भीत,
जिस पर उनसे कहा स्यार ने
“क्यों डरते मुझसे हो मीत ?

खुद ब्रह्माजी ने मेजा है
मुझे बना वन का सम्राट,
रक्षक हूँ मैं तुम सबका औ
सत्ता मेरी बहुत विराट ।”

यह सुनकर सारे पशुओं ने
लिया उसे श्रुत राजा मान,
खिदमत करने लगे शेर औ
वने भेड़िये थे दरबान ।

राजा अपने सगे सियारों
को रखता था बिलकुल दूर,

कभी पास भी आते वे तो
प्रहरी मार भगाता दूर ।

किंतु एक दिन दूर कहीं पर
‘हाँव-हाँव’ कर भूँके स्यार,
जिसको सुनकर रोक न पाया
अपने को वह नीला स्यार ।

यद्यपि था वह राजा फिर भी
गया नहीं था जाति-स्वभाय,
सिंहासन पर बैठे बैठे
बोल उठा वह भी कर ‘हाँव’ ।

स्वर सुनते ही जान गये सब—
जो राजा है वह तो स्यार !
गरज उठे फिर तो वे सारे
क्षपट गिराया उसको मार !

इसीलिए हे पिंगलक स्वामी,
साथ बैल का दूँ अब छोड़,
मेल पराये से मत रखें
अपने जन से नाता तोड़ !”

पिंगलक बोला—“लेकिन दमनक,
उससे क्या है मुझको भय?
साथ छोड़ दूँ क्यों मैं उसका,
करके यों उस पर संशय?”

दमनक बोला—“नहीं आपको
मालूम ज़रा भी तो है हाल,
पता चलेगा जल्दी ही यह
बैल बड़ा वह है विकराल !

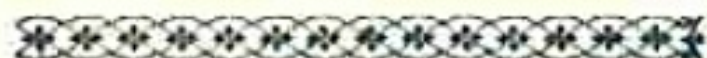
कल आयेगा सुबह-सुबह वह
करके उन्नत अपना भाल,
बैठेगा वह दूर आपसे
करके आँखें अपनी लाल !”

इतना कहकर उठा वहाँ से
और गया दमनक उस ठौर,
जहाँ खड़ा होकर संजीवक
चरा रहा था मुँह के कौर ।

दमनक को लख पूछा उसने—
“आज दीखते तुम बेचैन,
कहो, वजह क्या इसकी भाई,
क्यों हैं खोये-से दो नैन ?”

दमनक बोला—“हाय, यताना
तो मुझको सब है ही आज,
पाप घुसा है उसके मन में
जिस पर तुमको भारी नाज ।





सुबह सुबह तुम जय जाओगे
कल राजा पिंगलक के पास,
तुम्हें मार ही वह डालेगा
और बनायेगा निज घास । ”

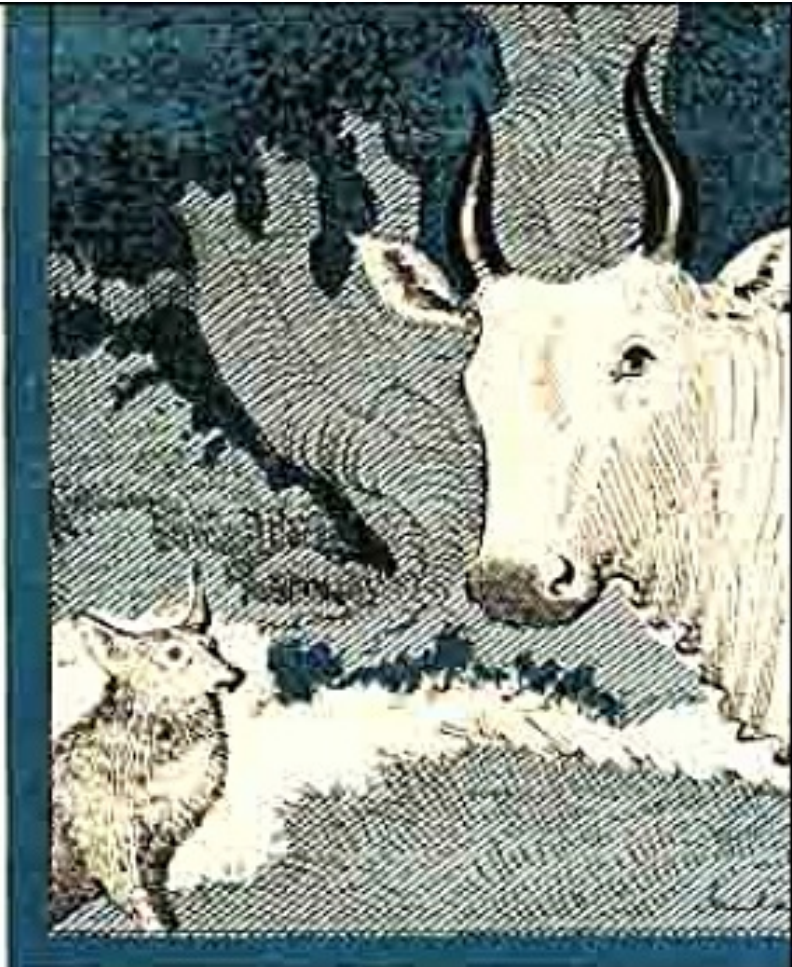
यह सुनते ही संजीवक के
दिल पर पड़ा बहुत आघात,
लगे दीखने दग में उसको
सौ सौ भीषण उल्कापात ।

मौन रहा वह बहुत देर तक
फिर थोला लेकर निश्वास—
“ राजा का मन होता चंचल
किया व्यर्थ मैंने विश्वास ।

ईश्या के वश होकर कोई
भरता होगा उसके कान,
इसीलिए पिंगलक ने मेरे
वध करने की ली है ठान । ”

दमनक थोला—“ अगर सोचते
जात यही है सच्ची आप,
तो फिर मीठी बातों से ही
रिझा लीजिए नृप को आप । ”

इस पर थोला संजीवक वह—
“ अरे, भरम के सब हैं खेल,
नहीं टिकाऊ हो सकता है
कभी किसी राजा से मेल ।



ईद-गिर्द रहते हैं उसके
चापलूस लोभी मक्कार,
बहकाते रहते जो उसको
कह झूठी बातें दो-चार ।

किसी भाँति यदि सुश भी कर लूँ
मैं इस राजा को एक बार,
तो पुनः कभी उनकी बातों में
आकर देगा मुझको मार ।—

उसी भाँति जिस भाँति कि कौवे
और गीदड़ ने चलकर चाल,
मरवाया था एक ऊँट को
वन के राजा से तत्काल ! ”





गधे का ज्योतिष

सरयू नदी के किनारे, एक ग्राम में एक ज्योतिषी रहा करता था। आस-पास के गाँवों में, वह अपने ज्योतिष के पांडित्य के लिए प्रसिद्ध था। लोगों का यह भी स्थूल था कि जन्मपत्री लिखने में उससे अच्छा कोई न था।

ज्योतिषी की कीर्ति राजधानी तक भी पहुँची। राज कर्मचारियों ने मिलकर उसे राजधानी में बुलवाया। थोड़े दिनों बाद, ज्योतिषी को राजा का आश्रय भी मिल गया। जो कुछ वह बताता, वह ठीक निकलता।

होते होते ज्योतिषी को कर्मचारियों का समर्थन मिल गया। उसने काफ़ी पैसा भी कमा लिया। कुछ दिनों में, नदी किनारे अपने ग्राम में वह सैकड़ों एकड़ भूमि का मालिक भी बन गया। फसल के दिनों में ज्योतिषी अपने गाँव चला

जाता, फसल कटवाता, उसको तुलवाता, गोदामों में रखवाता और उसकी बिक्री का प्रबन्ध कर, वह फिर राजधानी वापिस आ जाता।

एक साल वह अपने गाँव गया। कटी कटाई फसल खलिहान में ही पड़ी थी। दुपहर को भोजन के बाद, वह अपने घर के बरान्डे में बैठा था।

उस समय, गाँव का घोड़ी, धुले कपड़े गधे पर लाद, घर जा रहा था। वह ज्योतिषी को देखकर रुका और उसने उससे पूछा....“क्यों हुजूर! फसल सारी, लगता है, खलिहान में ही है। जल्दी घर ले आइये। उसे लाने में देरी काहे की है?”

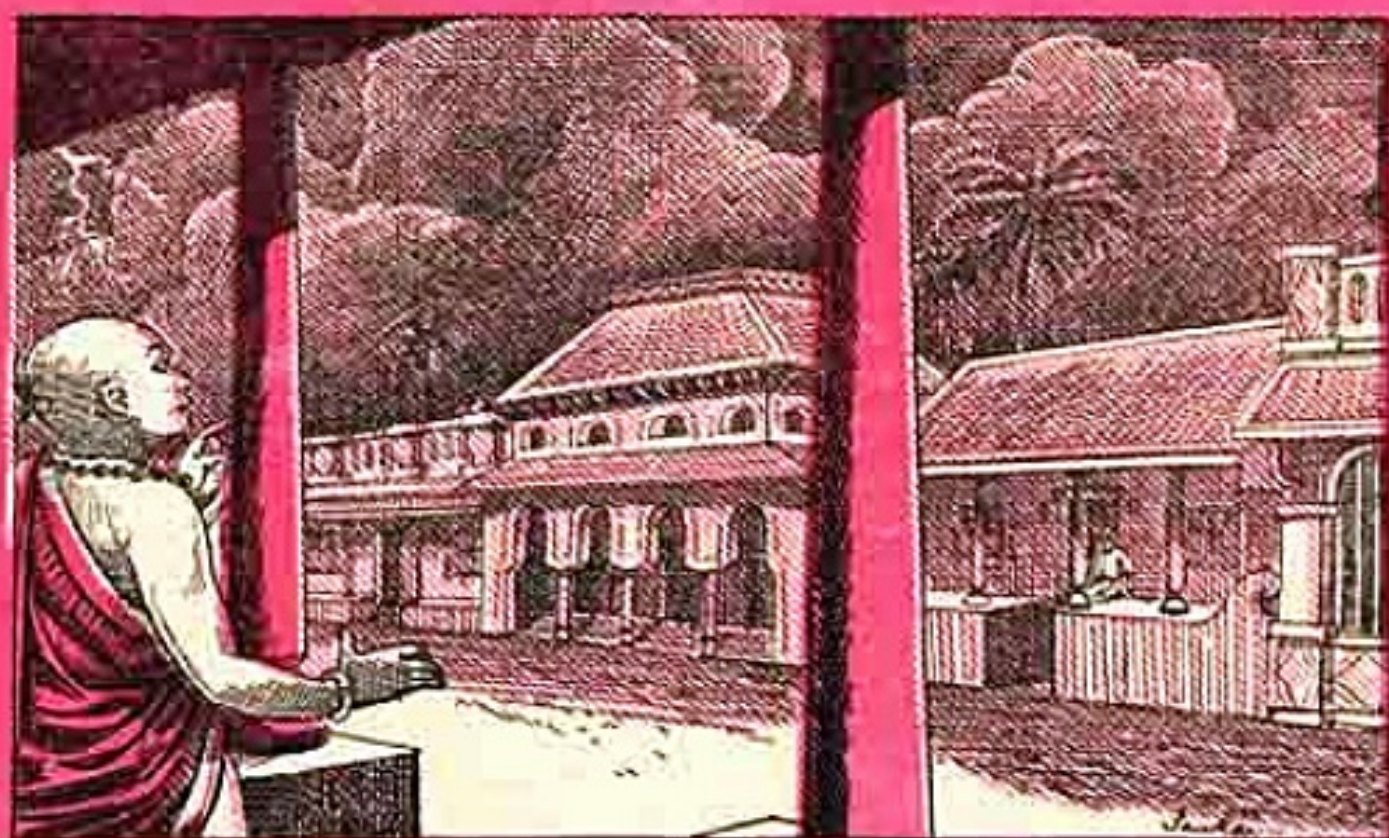
“ले आयेंगे। अभी, जल्दी क्या है वे?” ज्योतिषी ने कहा।

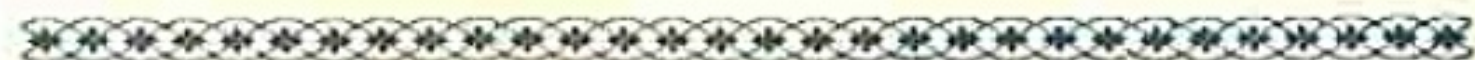
“जल्दी क्यों नहीं है?...एक डेढ़ घंटे में तूफान जो आ रहा है!” धोबी ने कहा।

ज्योतिषी ने कहा—“तेरा सिर, बड़ी फसल फिजूल खाक हो जायेगी।”
जा वे। इन दिनों वर्षा ही नहीं होती है.... कहता कहता, धोबी, अपना गधा हाँकता फिर तूफान कहाँ से आयेगा? देख, हाँकता चला गया।

आसमान की ओर। कितना साफ है, कहाँ हँसते हुये, आकाश की ओर देखा। पश्चिम की ओर उसे अंगूठे के बराबर बादल दिखाई दिया। देखते देखते.... जंगली हाथियों की तरह, बिघाड़ते बिघाड़ते, बादल चारों ओर से गरज गरजकर उमड़ने लगे। सूर्य छुप गया। सर्वत्र अन्धकार

“मैं आपके भले की कह रहा हूँ। मैं, दिन, महीने के बारे में नहीं जानता, पर यह बात पक्की है कि थोड़ी देर में





सा छा गया। जोर से आन्धी चलने लगी। आन्धी इतनी तेज़ कि बड़े बड़े पेड़ भी उसकी थपेड़ न सह पा रहे थे। बिजली चमकने लगी। बून्दा-बान्दी शुरू हो गई।

ज्योतिषी को कुछ न सूझा कि क्या करे। धोबी के कहने पर अगर फसल ले आता तो कोई नुकसान न होता। क्योंकि पंचाग के अनुसार इस दिनों वर्षा की सम्भावना न थी इसलिये ज्योतिषी ने धोबी की बात न सुनी।

“हाँ....मगर धोबी कैसे एक घंटे पहिले जान सका कि तूफ़ान आ रहा था।” ज्योतिषी को आश्चर्य हो रहा था। तूफ़ान के थोड़ा कम होते ही वह धोबी के घर भागा भागा गया। “अबे तूने कहा और वर्षा आ गई। अजीब बात है। तू ज़ल्हूर ज्योतिष जानता है। किसके पास सीखा है?” उसने उत्कण्ठापूर्वक पूछा।

“और कौन, हुज़ूर, मेरे गधे ने ही मुझे ज्योतिष सिखाया है। उसके सामने ये पंचाग बग़ैरह किसी काम के नहीं। अभी वर्षा के आने में थोड़ी देर होती है कि उसके शरीर के बाल खड़े हो जाते हैं। वह कान, और आँखें उस ओर करके वर्षा को सुनने की कोशिश करता है, जिसका हमें भान भी नहीं होता। फिर दुम लपेट कर, इधर उधर कूदता-फाँदता है। उसका ज्योतिष कभी ग़लत नहीं जाता।”

ज्योतिषी ने जाते हुये कहा—“आज जो कुछ हुआ है किसी से कहना नहीं, तेरा भला होगा। नहीं तो व्यर्थ मेरी बदनामी होगी।” उसने धोबी को मनाया।

परन्तु यह बात सबको मालूम हो गई। उन लोगों की संख्या कम हो गई, जो मौसम आदि के बारे में, ज्योतिषी की सलाह हमेशा लिया करते थे।





[८]

[भुवन-सुन्दरी के कारण द्रोण नगर का घेरा डाला गया। घेरे के दसवें वर्ष में दोनों तरफ के कई बड़े योद्धा मारे गये। इनमें ग्रीक सेना के, वज्रकाय और भूधर मुख्य थे और द्रोण सेना के वीरसिंह, मोहन आदि मुख्य थे। मोहन के मारे जाने के बाद, अरिभयंकर ने उसकी इच्छा के बग़ैर भुवन-सुन्दरी से विवाह कर लिया। द्रोण के पतन के लिए कृतानिधय रूपधर की, भुवन-सुन्दरी और उसकी सास ने भी मदद दी।]

द्रोण नगर के पतन के कुछ दिन पहिले ही वर्धन के लड़कों का आपसी शगड़ा बातचीत करने के बदले उसने रूपधर से बहुत बढ़ गया।

यह देख, वर्धन ने ग्रीक लोगों से, रहस्य-पूर्वक सन्धि करनी चाही। उसने अपने साले, प्रत्याज्ञ को राजा के पास भेजा। प्रत्याज्ञ की अरिभयंकर से बिल्कुल न पटती थी। इसलिए, सन्धि के बारे में बातचीत करने के बदले उसने रूपधर से शर्त यह थी कि राज-सिंहासन और राज्य का आधा धन प्रत्याज्ञ को मिले और द्रोण नगर रूपधर को सौंपा जाये। इस पड़यन्त्र को सकल करने के लिए, प्रत्याज्ञ ने रूपधर से कहा कि प्रशंस की मदद भी ज़रूरत पड़ने पर मिल सकती थी।

[एक ग्रीक पुराण कथा]



ट्रॉय नगर में, ग्रीक लोगों की सहायता करनेवाले भी थे। उस नगर से बुद्धिमति की मूर्ति चुरा ली गई थी। ट्रॉय नगर के पतन के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ उपस्थित थीं। अब केवल ग्रीकों का नगर में प्रवेश करना बाकी था। इसलिए ग्रीक एक बड़े काठ के ढोड़े के बनाने में दिन-रात लगे हुए थे।

इस ढोड़े को तैयार करनेवाले का नाम था दोर्दण्ड। वह ग्रीक सेना की सहायता करने के लिए तीस नौकाओं को लेकर आया था। वह बड़ा कारीगर था।

मल्ल-युद्ध में भी बड़ा माहिर था। परन्तु बड़ा डरपोक था। उसने एक काठ का ढोड़ा बनाकर उसके एक तरफ एक दरवाजा भी बनवाया, जो बाहर से न दिखाई देता था। और उसने ढोड़े के दूसरी तरफ खुदवा दिया—“वापिसी यात्रा सुरक्षित रूप से हो सके, इसके लिए ग्रीकों का, बुद्धिमति देवी के लिए यह उपहार....” ढोड़े से बाहर आने के लिए उसने एक बड़ी सीढ़ी भी तैयार की।

रूपधर ने कुछ ग्रीक वीर योद्धाओं को, उस ढोड़े के पेट में छुपे रहने के लिए प्रेरित किया। इनमें प्रताप, रूपधर, देवमय आदि, तीस योद्धा थे। ढोड़े के बनानेवाले दोर्दण्ड को भी उसमें चढ़ने के लिए कहा गया। सबके चढ़ने के बाद, वह भी जबरदस्ती चढ़ाया गया। उसके चढ़ने के बाद सीढ़ी अन्दर खींच ली गई। दरवाजा बन्द कर दिया गया और एक मजबूत ताला भी लगा दिया गया।

शेष कार्य, रूपधर की बनाई हुई योजना के अनुसार सम्पन्न हो गया।

उस दिन, अन्धेरा होते ही ग्रीक लोगों ने अपनी छावनी में आग लगा दी।

सिवाय उन लोगों के जो घोड़े के पेट में छुपे हुए थे, बाकी सब ग्रीक सैनिक, राजा के साथ जहाज़ में, लेनेडोस द्वीप के पास लंगर डाले हुए थे। परन्तु एक ग्रीक योद्धा जान बूझकर, काठ के घोड़े के साथ ट्रॉय नगर के पास ही रह गया। वह रूपधर का सम्बन्धी था। उसका नाम था चौर्यनाथ। ग्रीक जहाज़ों को कब वापिस आना चाहिए था, इसका संकेत देने के लिए वह वहाँ रह गया था।

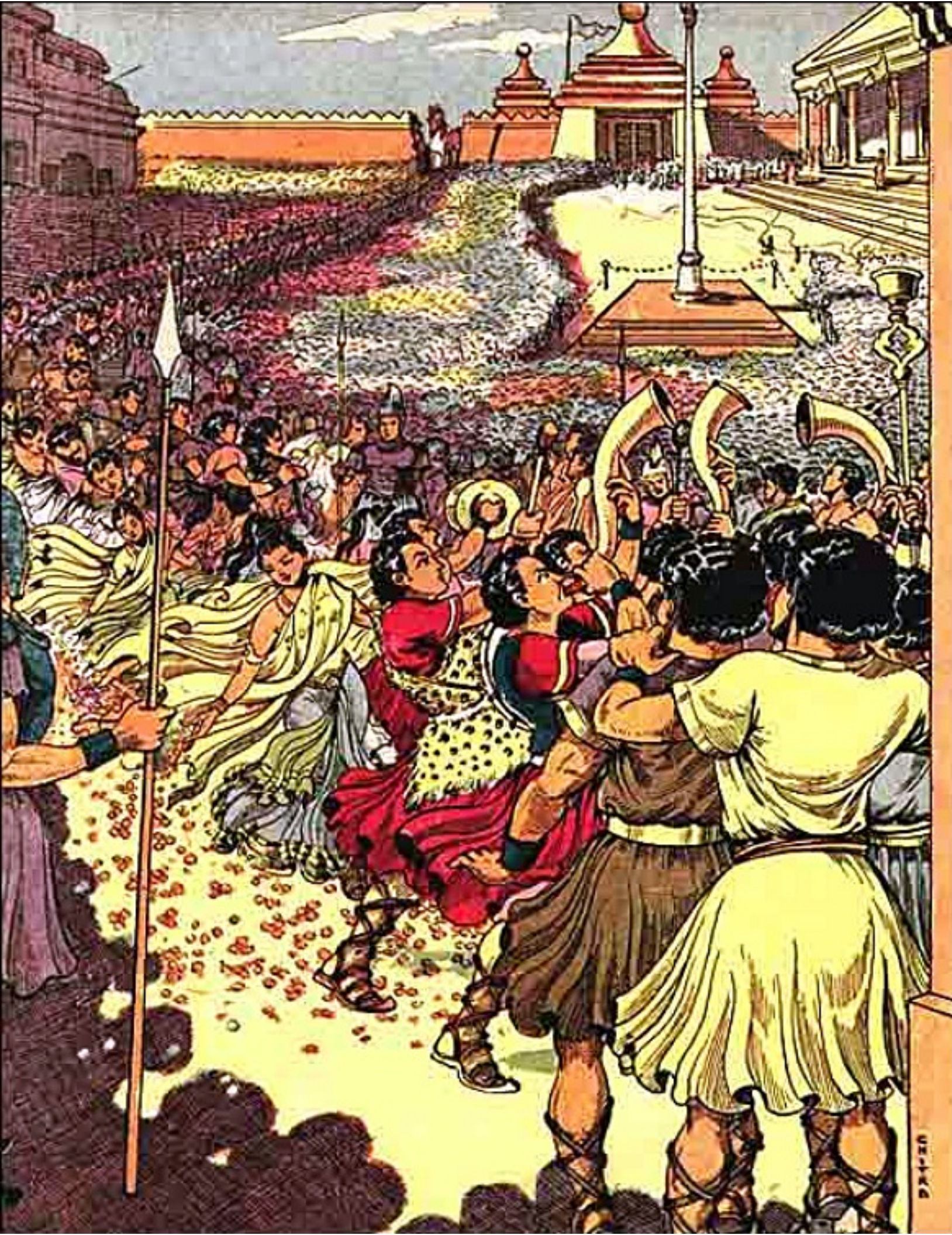
अगले दिन, सबेरा सुआ। ट्रॉय दूत ग्रीक छावनी देखने आये। उन्होंने वापिस जाकर बताया कि सारी ग्रीक छावनी ख़ाक हो गई थी और समुद्र के किनारे एक काठ के घोड़े को छोड़कर, ग्रीक जहाज़ों में भाग गये थे। यह सुनते ही, वर्धन अपने लड़कों को लेकर घोड़ा देखने गया।

जब कि सब आश्चर्य से काठ के घोड़े को देख रहे थे, तब एक व्यक्ति ने कहा— “जब यह बुद्धिमति के लिए उपहार में समर्पित किया गया है, तो हमें इसे क्यों नहीं, बुद्धिमति के मन्दिर के सामने यथाविधि रखना चाहिए?”



एक और ने कहा—“इस युद्ध में, बुद्धिमति ने हमारी मदद करने की अपेक्षा शत्रु की अधिक मदद की है। हमें इसे यहीं जला देना चाहिए। नहीं तो हमें इसे तोड़कर देखना चाहिए कि इसके पेट में क्या है!” और कई ने भी यही कहा।

ये बातें वर्धन को बिल्कुल न जैची। “जो वस्तु देवी को उपहार में दी गई हो, उसका नाश करना बहुत बड़ा पाप है। हमें इस घोड़े को, पहियों पर रख, नगर में ले जाना चाहिए।” उसने गम्भीरता पूर्वक सबसे कहा।



राजा के कथनानुसार, घोड़े को पहिये लगाकर, वे किले के दरवाजे के पास ले गये। पर दरवाजे में से वह अन्दर न ले जाया जा सका। इसलिए दोजनों ने किले की दीवार एक जगह तोड़ दी, और उस जगह में से घोड़ा अन्दर ले जाया गया। जगह तंग थी, इसलिए दो तीन चार काठ के घोड़े को अच्छी रगड़ लगी।

घोड़े के अन्दर आते ही किले की दीवारे फिर चिन दी गई। और घोड़े के नगर के बीचों बीच ले जाया गया।

घोड़े को लेकर, दोजनों में बहस होने लगी। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ और। बात बढ़ते बढ़ते उनमें खटपट भी हो गई। बर्धन की लड़की, जालिनी को दिव्य-दृष्टि प्राप्त थी। वह घोड़े को देखकर चिल्लाई—“इस घोड़े में सशस्त्र वीर हैं।” प्रत्याज्ञ के लड़के तीक्ष्ण दृष्टि ने भी वही बात कही। “आप कर्तई मूर्ख हैं, नहीं तो क्या ग्रीक दी हुई चीज़ को फिर वापिस ले जायेंगे?” यह कहकर उसने अपना भाला घोड़े पर जोर से मारा। वह काठ के घोड़े के पेट में घुस गया। उसी समय



अन्दर से आवाज़ आई, जिससे साफ़ मालूम होता था कि भाला जाकर किसी हथियार से लगा था।

चारों ओर जमा हुए लोग एक साथ चिल्लाये—“इसे जला दीजिये, नहीं तो किले की दीवार से उठाकर फेंक दीजिये।”

परन्तु बर्धन की तरफ़ के लोग लगातार कह रहे थे कि काठ के घोड़े का कुछ न किया जाये।

अभी.....इस बात पर तर्जन-भर्जन हो ही रहा था कि दो दोजन सैनिक एक ग्रीक कैदी को जँजीरों से बाँधकर वहाँ

लाये। वह चौर्यनाथ था। चौर्यनाथ से दोजनों ने तरह तरह के प्रश्न पूछे। उसने रूपधर से पाठ सीखा था। इसलिए दोजनों को विश्वास कराने के लिए, उनसे उसने यों कहा:

“प्रबोध की हत्या का रहस्य मैं जानता हूँ। क्योंकि मैं उसका रहस्य जानता हूँ, इसलिए रूपधर को मुझ पर इतना गुस्सा है। ग्रीक तो पहिले ही युद्ध से उब गये हैं। अगर हवा ठीक रही तो वे बहुत पहिले चले भी गये होंगे। जब वे द्रोण नगर का घेरा डालने आ रहे थे

तब भी वायु अनुकूल न थी, ग्रीकों ने बलि देकर वायु देवता को मनाया। इस बार रूपधर ने कांशुक को खींचकर पूछा—
“बताओ, किसकी बलि दी जाय?”
कांशुक ने दस दिन का समय माँगा। मेरा विश्वास है कि इस बीच रूपधर ने कांशुक को ब्रूस दे दी होगी। दस दिन बाद कांशुक ने भरी सभा में मेरी ओर संकेत किया। मुझे जँजीरों से बाँध दिया गया। परन्तु सीमाम्यवश मुझे बलि देने से पहिले ही हवा ठीक चलने लगी। तुरत सब मेरी बात भूल गये, और यात्रा



की तैयारी करने लगे। मैं मौका पाकर भाग आया।”

वर्धन ने, चौर्यनाथ की हर बात पर विश्वास किया। “मगर इस घोड़े के बारे में तुम क्या कहते हो?”

“यह बात सच है कि बुद्धिमति का हम पर विशेष अनुग्रह है। परन्तु जब रूपधर और देवमय उसको आपके नगर से उठाकर ले गये तो उसको हम पर गुस्सा आ गया। मूर्ति हमारी छावनी में आई ही थी कि उसमें से तीन बार ज्वालायें निकलीं। मूर्ति के पैर पसीने से तर हो

गये। साफ़ था कि मूर्ति क्रुद्ध थी। कुशांक ने राजा को यह देखकर सलाह दी कि इस बार यह युद्ध काफ़ी है। बुद्धिमति देवी को कोई भेंट देकर तुरत वापिस जाने में ही भला है। अच्छा मुहूर्त देखकर फिर आक्रमण किया जा सकता है।” चौर्यनाथ ने बताया।

“इतना बड़ा घोड़ा क्यों तैयार किया गया?” वर्धन ने पूछा।

“श्रीक यह चाहते थे कि आप इसे नगर में न ले जायें। अगर आप इस घोड़े को यों ही छोड़ देते तो बुद्धिमति देवी को



आप पर गुस्सा आता। अगर आप मेहनत करके इसे अन्दर ले जाते तो आपकी पराजय न होती। आपका साम्राज्य बड़ा होता, यह सच न हो, इसलिये ग्रीक लोगों ने इतना बड़ा धोड़ा तैयार किया था।" चौरेनाथ ने कहा।

"झूट, सरासर झूट! रूपधर की कोरी कल्पनाएँ हैं ये। वर्धन! तुम इन बातों का विश्वास कर न बिगड़ो।" इस प्रकार तीक्ष्ण दृष्टि चिल्लाया। उसने यह भी कहा "मैं अभी जाकर अपने आराध्य देवता को बलि दूँगा। और इस काठ के धोड़े को भस्म करने का उपाय जानूँगा।"

परन्तु तीक्ष्ण दृष्टि यह कार्य न कर सका। वह ट्रोंय नगर की रक्षा भी न कर सका। क्योंकि, जब वह घर पहुँचा तो कहीं से दो बड़े साँप आये और तीक्ष्ण दृष्टि के

दोनों लड़कों को मार गये। बच्चों की रक्षा के लिए वह लपका। और वह भी उनके काटने से मारा गया।

यह अपशकुन देखकर ट्रोंजनों को चौरेनाथ की बातों पर पूरा विश्वास हो गया। वर्धन ने सोचा, क्योंकि तीक्ष्ण दृष्टि ने काठ के धोड़े पर भाला फेंक कर पाप किया था, इसलिए उसकी यह हालत हुयी। उसने विधि पूर्वक, काठ के धोड़े को बुद्धिमति देवी को समर्पित किया। ट्रोंजन युवतियों ने नदी के किनारे से फूल लाकर उस पर चढ़ाये। उसके पैरों के चारों ओर भी रखे। इसी समय ट्रोंजन विजयोत्सव मनाने के लिए भी तैयारियाँ करने लगे। केवल प्रशंस घबरा गया, और वह अपनी सेनाओं को लेकर ईडा पर्वत की ओर चला गया।

(आगामी अंक में समाप्त)



बढ़ते जाना....

श्री देवप्रकाश गुप्त, जमालपुर (बिहार)

बढ़ते जाना
मत घबड़ाना
भारत की संतान ।

तेरे एक इशारे पर
आयेगा स्वर्ण विहान ।
दीपों-सा जल जल कर नित
मुमकान लुटाओ, ओं प्यारे !

कभी लक्ष्य का झण्डा नहीं
झुकाओ, आँखों के तारे !
आशीषों का कुमकुम देगा

तुम्हें चाँद-दिनमान ।
भारत की संतान

तेरे एक इशारे पर
आयेगा स्वर्ण विहान ।

जहाँ अन्धेरा रहे वहाँ
तुम फूल ज्योति के बन जाओ

तूफानों के जलूस में चलने ।
से कभी न भय खाओ
तब तुमको पूजेगी दुनियाँ
पूजेंगे भगवान
भारत की संतान ।

तेरे एक इशारे पर
आयेगा स्वर्ण विहान ।

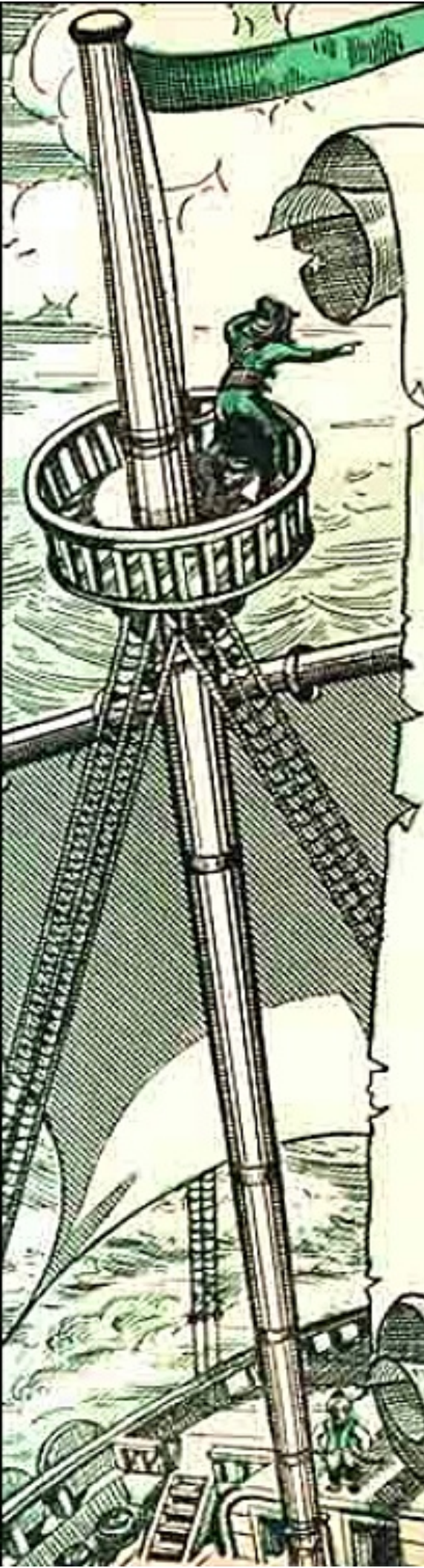
यह जिन्दगी मुसीबत में ही
चमका करती ; यह जानो

पथ पर निर्भय बढ़े चलो ।
तुम पुण्य प्रगति का पहिचानो ।
मंजिल तक तेरी पूजा ।

की अंजलि हो मुसकान ।
भारत की संतान

तेरे एक इशारे पर
आयेगा स्वर्ण विहान ।

बढ़ते जाना
मत घबड़ाना
भारत की संतान ।



नाविक सिन्दबाद

कुछ समय बीत गया। एक दिन शाम को, मैं घर के बरामदे में बैठकर ठण्डी हवा का आनन्द ले रहा था कि गली में से कुछ व्यापारी गुजरे। उनको देखते ही मालूम होता था कि वे किसी दूर देश से आ रहे थे। क्योंकि वे बहुत दिनों बाद मातृभूमि वापिस लौट रहे थे, इसलिए उनके मुँह से आनन्द टपक रहा था। वह आनन्द ऐसा था, जो स्वदेश में रहता आदमी कभी नहीं पा सकता था। उनको देखने पर मुझे भी फिर देश विदेश में घूमने की इच्छा हुई।

मैंने उसके दूसरे ही दिन व्यापार के लिए कुछ माल खरीदा और उन्हें लेकर मैं बसरा पहुँच गया। वहाँ एक बड़ा जहाज़ यात्रा के लिए तैयार था। उसमें मुझ जैसे व्यापारी और राज-कर्मचारी आदि यात्रा कर रहे थे। मैंने भी अपना माल उस जहाज़ में लदवा दिया और खुशी खुशी उसमें यात्रा के लिए फिर समुद्र में निकल पड़ा।

छठीं समुद्र यात्रा

CHITRA

नई नई चीजें देखते, माल खरीदते, और उस माल को बेचते, एक देश से, दूसरे देश को और एक नगर से दूसरे नगर को हम लगातार चलते जा रहे थे। एक दिन जहाज़ पर हम आराम कर रहे थे कि कप्तान जोर जोर से चिल्लाने लगा। पगड़ी नीचे फेंककर पागल की तरह अपना मुँह और दाढ़ी नोचने लगा।

हम सबने उसको चारों ओर से घेरकर पूछा—“क्या बात है, क्या बात है? कुछ बोलो तो सही!” कप्तान ने कहा—“भाइयों गजब हो गया है। हम रास्ते से भटक गये हैं। ऐसे समुद्र में आ गये हैं, जहाँ हम रास्ता नहीं जानते हैं। अब अल्लाह ही हमारा मालिक है। सब अल्लाह की प्रार्थना करो। अब कोई दूसरा उपाय नहीं है।”

कह कहकर, पाल ठीक करने के लिए वह मस्तूल पर चढ़ा। इस बीच तेज़ हवा चलने लगी। उसकी चोट से पतवार टूट गयी। मस्तूल से उतर कर कप्तान ने कहा—“अल्लाह से बढ़कर कोई नहीं है। होने वाले को कोई नहीं रोक सकता। भाइयो! अब हमारा हिसाब पूरा हो गया है। मौत हमें निगलने जा रही है।”



यात्री चिल्लाने लगे। एक दूसरे को विदा देने लगे। इतने में, तूफ़ान में, जहाज़ एक पहाड़ से टकराया और पापड़ हो गया। कुछ यात्री पानी में डूब गये। कुछ लोग तैरते रहे और कुछ पानी में पत्थरों पर जा चढ़े।

वह पर्वत समुद्र में काफ़ी दूर तक चला गया था। वह किसी द्वीप का अंग था। किनारे पर टूटे हुए जहाज़ों के टुकड़े पड़े हुए थे। सामान बिखरा पड़ा था। उस सामान में क्रीमती मोती गहने वगैरह, भी थे। हम उनमें से होते हुए किनारे पर पहुँचे।



के कारण कोई काली चीज़ पहाड़ों से पिघलकर नाले के रूप में समुद्र की ओर बह रही थी। समुद्र की मछलियाँ उस द्रव को पी रही थीं। थोड़ी देर बाद, वह द्रव, मछलियाँ फिर उल्टी कर देती थीं। वह फिर ऊपर तैर आता, उसका रंग बदल जाता। वह पथरा जाता और मणि होकर किनारे पर लग जाता। उस प्रवाह के कारण और उन मणियों के कारण सारा द्वीप चमक रहा था।

इतनी सम्पत्ति यहाँ थी, पर किसी मनुष्य की वहाँ रहने की किस्मत न थी। क्योंकि जो कोई जहाज़ वहाँ लगता, टूटकर रहता, फिर वापिस न जा पाता। यद्यपि हम ज़िन्दे इस द्वीप में पहुँचे थे, पर इतनी बड़ी धनराशि के बीच में भी हम दरिद्र थे। इतना धन था कि कितनी ही दावतें दी जा सकती थीं, पर हम भूख के कारण तड़प रहे थे। उसका वहाँ कोई मूल्य ही नहीं था। जो थोड़ा बहुत खाने के लिए हमारे पास था, हमने बड़ी ईमानदारी से आपस में बाँट लिया। मेरे साथ के लोगों को उपवास करने की आदत न थी, उनकी ज़िन्दगी में ऐसा मौका कभी नहीं आया

मैं जैसे-तैसे एक पहाड़ी नाले के पास पहुँच गया। वह नाला, एक पहाड़ से निकलकर, थोड़ी दूर बहकर एक गुफा में चला गया था। उस नाले के दोनों किनारों पर मोती, सोना, चान्दी आदि, जड़े हुए थे। नाले में भी, पत्थरों की जगह क्रीमती रत्न चमक रहे थे। उस सामान में जो धन-सम्पदा बिखरी पड़ी थी, वैसी किसी मनुष्य ने कहीं भी न देखी होगी। उस दृश्य को देखकर आँखें चौंधिया गईं। नदी के किनारे पेड़ थे।

यही नहीं इस द्वीप में एक और नाला था। वह पानी का नाला न था। गरमी

था; इसलिए जो कुछ भोजन था, वह दो चार बार खाकर पूरा का पूरा ख़तम कर दिया। और फिर भूखों मरने लगे। मैं बहुत थोड़ा खाता। वह भी दिन में एक ही बार। वैसे तो मुझे उपवास की आदत थी ही।

जो मर गये थे, हमने उन्हें समुद्र के किनारे गाड़ दिया। शवों के कफ़न के लिए वहाँ कितना ही कपड़ा था। इन सब दिक्कतों के साथ समुद्र से हवा का एक झोंका आया। हम सब बीमार हो गये। सिवाय मेरे, जो मरने से बच गये थे और मेरे साथ जीवन गुज़ार रहे थे, वे सब इस रोग से मर गये। आख़िर मृत व्यक्तियों को वहाँ गाड़कर उस द्वीप में मैं अकेला ही रह गया।

चाहे कितना ही कम खाओ, मेरी रसद भी ख़तम होने को आई। “अगर मैं अब मर गया तो शव को नहला-धुला कर, दफ़नाने वाला भी कोई न था। मैं पहिले क्यों न मर गया था?” मैं यह सोच दुखी होने लगा। मैंने अपने लिए एक गढ़ा भी खोदकर तैयार कर लिया। जब मौत आयेगी तो मैं गढ़े में कूद



जाऊँगा। हवा ही मुझे दाब देगी। नहीं तो यह काम करने के लिए अब वहाँ है ही कौन? यह सोचकर ही मैंने वह गढ़ा खोदा था। मेरे वैराग्य ऐसा वैसा न था। “अरे सिन्दबाद! पाँच बार मौत के मुँह से निकले हो, तब भी अक़ल नहीं आई। राख में सोता हुआ कुत्ता भी तो एक जगह नहीं पड़ा रहता। क्यों तुम में रुपये-पैसे के लिए इतना लालच है? जो कुछ तेरे पास है, खूब खर्चने पर भी तीन पीढ़ियों के लिए काफी है।” मैंने यह सोच सोचकर अपने को ही खूब डाँटा-उपटा।

परन्तु इस पश्चात्ताप के साथ ही मुझे एक बात सूझी। वह नाला जो गुफा से गया है, कहाँ जाता है? वह ज़रूर पहाड़ के उस तरफ़ गया होगा। पहाड़ के पार क्या है? यहाँ इस बुरी मौत मरने के बदले यह जाना जा सकता है कि नाला कहाँ जाता है, और वहाँ क्या है? भले ही इसमें मौत आ जाये।

यह सोचकर, मुझ में कुछ हिम्मत आई। मैंने बड़ी बड़ी टहनियाँ लीं और उनको मिलाकर एक तमेड़ बना ली। उसके ऊपर जहाज़ के टुकड़े रख दिये। मणि वगैरह चुन चुनकर मैंने तमेड़ पर रख लीं। मेरे पास जो कुछ खाना था, वह भी उस पर रख दिया। दो टहनियों को चप्पू की तरह चलाता, मैं नाले में निकल पड़ा।

मेरी तमेड़ जाती जाती, नाले के साथ गुफा में घुसी। अन्दर घना अन्धेरा था।

नाला जिस जिस तरफ़ मुड़ता तमेड़ भी मुड़ती। तमेड़ कहीं कहीं पत्थरों से टकराती। मेरा सिर भी गुफा की छत से टकराता। अगर बचने की भी कोशिश करता, तो वहाँ इतना अन्धेरा था कि हाथ को हाथ भी न देखता था।

“मैं इस अन्धेरे गढ़े में आया ही क्यों? इससे अच्छा तो यह था कि उस रेत पर ही मर जाता। हे भगवान!” मैंने सोचा, पर वापिस जाने का कोई रास्ता न था। नाला ज्यों ज्यों नीचे उतरता जाता, उसकी धार भी तेज़ होती जाती थी। मेरे चप्पू किसी काम के न रहे। इसलिए मैंने उन्हें छोड़ दिया और तमेड़ पर पेट के बल लेट गया, नहीं तो मेरा सिर टूट जाता। मैं फिर ऐसा सो गया जैसे बेहोश हो गया हूँ।
(अभी और है)





मेड़िये की शरारत

लोमड़ी जब से खरगोश द्वारा अपमानित हुई थी सूखी जाती थी। एक दिन लोमड़ी कहीं जा रही थी कि मेड़िये ने उसे देखकर पूछा—“क्यों लोमड़ी! तुम सूखकर कांटे की तरह कैसे हो गयी हो?”

लोमड़ी ने कहा—“जिस दिन मैं उस खरगोश को मारकर खा जाऊँगी, उस दिन मेरी बीमारी काफ़ूर हो जायेगी।”

यह बात सारे जंगल में फैल गई थी कि खरगोश ने लोमड़ी को खूब तंग किया था। फिर भी मेड़िये ने यह दिखाया, जैसे कुछ जानता ही न हो, पूछा—“यह क्या! आखिर हुआ क्या है?”

लोमड़ी ने जो कुछ गुज़रा था, बता दिया। सब सुनकर मेड़िये ने कहा—“क्या इतनी-सी बात पर तुम्हें इतनी फ़िक्क हो रही है? शाम तक उसका हाल ठीक कर देंगे।”

“कैसे?” लोमड़ी ने पूछा।

“मैं खरगोश को तुम्हारे घर लाऊँगा। ठीक है?” मेड़िये ने पूछा।

“हमारे घर तक आने का उसमें भला हिम्मत कहाँ है? कभी नहीं आयेगा” लोमड़ी ने कहा।

“वह सब मुझ पर छोड़ दो। तुम घर जाकर बिस्तर पर इस तरह लेट जाओ, जैसे जान चली गई हो। जब खरगोश आकर तुम्हारे शरीर को छूये तब तुम उसे पकड़ लेना।” मेड़िये ने पूछा।

लोमड़ी को यह बात सुनकर बड़ी खुशी हुई। घर जाकर, बिना हिले-डुले वह बिस्तर पर लेट गई।

इस बीच, मेड़िये ने जाकर खरगोश के घर का क़ियाड़ खटखटाया। अन्दर से खरगोश ने पूछा—“कौन हैं आप?”

“मैं भेड़िया हूँ। ज़रा दरवाज़ा खोलो। मैं तुम्हें एक अशुभवार्ता सुनाने आया हूँ।” भेड़िये ने कहा।

“अगर यह बात है तो ज़रूर सुनूँगा।” खरगोश ने दरवाज़ा खोला।

“हमारी लोमड़ी मर गई है। तुम ज़रा उसे देख तो आओ।” भेड़िये ने कहा।

“तो उसकी बिना अन्त्येष्टि-क्रिया किये, इस तरफ़ क्यों चले आये?” खरगोश ने पूछा।

“हाँ! उसी काम पर जा रहा हूँ।” भेड़िया यह कहकर आगे बढ़ गया।

खरगोश थोड़ी देर यह सोचता रहा कि लोमड़ी को देखा जाये कि नहीं। फिर उसने सोचा—“जाकर देखें तो, आखिर असली बात क्या है?”

खरगोश ने लोमड़ी के घर जाकर, दरवाज़ा खोलकर अन्दर झाँककर देखा।

जैसा भेड़िये ने कहा था, लोमड़ी बिस्तर पर बिना हिले-डुले पड़ी थी।

खरगोश अपने आप में बातें करने लगा—“अरे अरे! शव को देखने के लिए एक भी न आया! मुझे भी बहुत काम है! मैं ही शव की रखवाली करूँगा।”

लोमड़ी यह सुनकर बिल्कुल न हिली।

थोड़ी देर रुककर खरगोश फिर यों कहने लगा—“लोमड़ी शायद सचमुच मरी नहीं है। क्योंकि जब लोग देखने आते हैं, तो मरे हुए को कहना चाहिये—“ओहो....”

लोमड़ी ने यह क्यों नहीं कहा? अगर लोमड़ी मरी नहीं है तो मेरा यहाँ क्या काम! मैं चला जाऊँगा।”

यह बात सुनते ही, लोमड़ी ने अपना पिछला पैर उठाकर कहा “ओहो।”

तुरत खरगोश वहाँ से बाण की तरह भाग गया। [अभी और है]



फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९५७

::

पारितोषिक १०)



कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए । परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों । परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही

लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ५, जून १९७ के अन्दर भेजनी चाहिये ।

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्द्रामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जून - प्रतियोगिता - फल

जून के फोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं ।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा ।

पहिला फोटो :
ले खा ले, मेल बढ़ा ले !'

दूसरा फोटो :
'पी पानी, व्यास बुझा ले !'

प्रेषक : श्री पशुपतिनाथ, ४३-२ गली भैरों, नई सड़क, दिल्ली - ६ ।

कछुवे

हम तीन प्रकार के सरीसृप साधारणतया देखते हैं। उनमें कछुआ एक है। मगर एक है और छिपकलियाँ, साँप वगैरह तीसरी श्रेणी में आते हैं।

कछुवे के शरीर पर ढाल-सी होती है। दूसरे सरीसृपों के यह ढाल नहीं होती। कुछ कछुवे, आपत्ति से बचने के लिए अपना सिर और पैर ढाल में छुपा लेते हैं।

कछुवे दो प्रकार के हैं; एक पानीवाला और दूसरा मिट्टीवाला। पानी के कछुवे भी दो प्रकार के हैं। कई केवल कुएँ और तालाबों में ही रहते हैं। ये अच्छे पानी के कछुवे हैं। कई केवल समुद्र में ही रहते हैं, ये खारे पानी के कछुवे हैं।

कुएँ और तालाबों में जो कछुवे रहते हैं, वे फेफड़ों से श्वास लेते हैं। इसलिए उन्हें रह रहकर पानी की सतह पर हवा के लिए आना पड़ता है। पर जब तक वे पानी में सिर नहीं डुबाते, तब तक वे भोजन नहीं निगल सकते।

कछुवों के दान्त नहीं होते। परन्तु कई पानी के कछुवों के जबड़े इतने तेज़ होते हैं कि वे मनुष्य की हाथ की अंगुली को आसानी से काट सकते हैं।

कछुवे की चाल दुनिया में मशहूर है। कई कछुवे बहुत भारी होते हैं। कभी कभी इनका भार ५०० पाउण्ड से भी अधिक होता है। ये सौ साल से अधिक जीते हैं। इन पर बैठकर सवारी भी कर सकते हैं।

समुद्र के कछुवे हमेशा पानी में ही रहते हैं। सिर्फ अंडे देने के लिए वे बाहर आते हैं। इन्हें हरे कछुआ कहते हैं। इनके पैर चप्पू की तरह होते हैं।

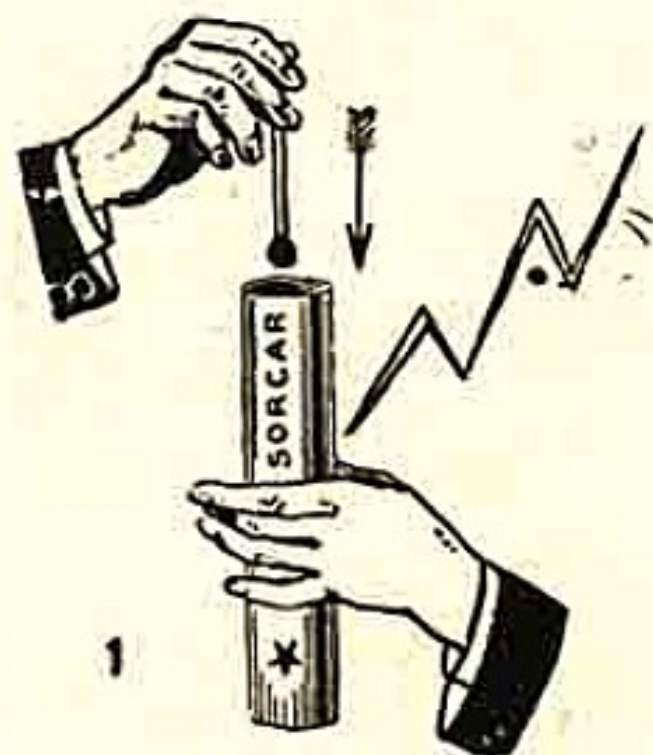
सब सरीसृपों की तरह कछुवे भी अंडे देते हैं। समुद्र में हरे कछुवे किनारे पर रेत में गढ़ा खोदते हैं, उसमें अंडे देते हैं। और गढ़े को भरकर, वे समुद्र में चले जाते हैं। रेत में अंडों को गर्मी मिलती है। जब अंडों में से बच्चे निकलते हैं, तो वे समुद्र की ओर रेंगते रेंगते चले जाते हैं। कई पक्षी उन्हें उड़ा लेते जाते हैं। जो पानी में चले जाते हैं, वे जीवित रहते हैं।





प्रो० पी. सी. सरकार

जादूगर दर्शकों को एक छोटी-सी, बेलन के आकार की, धातु की अथवा कागज की वस्तु दिखाता है। यह



वस्तु दियासलाई से कुछ लम्बी होती है और दोनों तरफ से खुली हुई होती है। बन्द नहीं।

जादूगर जेब में से एक दियासलाई की डब्बी निकालता है और उसमें से एक सलाई लेता है। तब बेलन को लम्ब रूप में रख दिया जाता है और दियासलाई को, मसालेवाले सिरे की तरफ से, उसमें रखा जाता है। (प्रथम चित्र)

अक्सर दियासलाई बाहर आ जाती है। वस्तुतः मसालेवाला सिरा पहले आना चाहिये, पर आता है दूसरा सिरा। (चित्र २)

इसलिये ही इसे उल्टी दियासलाई का जादू कहते हैं।

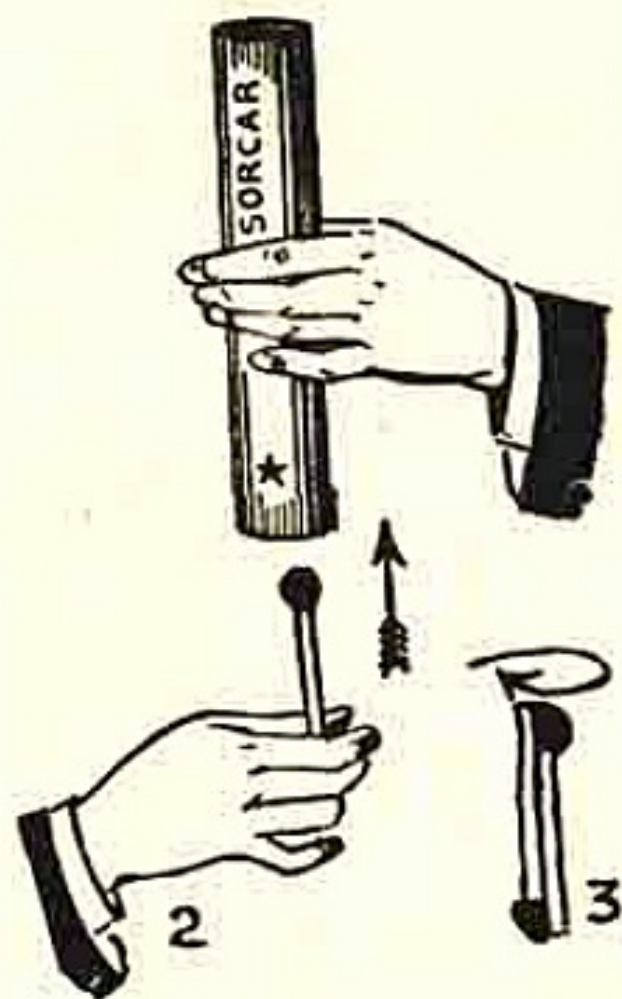
अब हम दूसरे भेद के बारे में बतायें। दियासलाई मामूली नहीं है। जादूगर पहिले से ही एक ऐसी

दियासलाई बनाता है, जिसके दोनों ओर मसाला होता है। मैं साधारणतः यह मोम या गोंद लगाकर करता हूँ, जिसे इस प्रकार रंगा जाता है, ताकि वह असली मसाला लगे।

बाकी सब आसान है। पर सब चालाकी और चुस्ती पर निर्भर करता है। इस सलाई को जादूगर अपने डिब्बे में रख लेता है। दर्शकों के सामने दूसरा एक सिरा अंगुली से पकड़कर निकालता है। अधखुली डिब्बी फर्श पर ही छोड़ दी जाती है।

यूरोप में, वे कागज़ की सलाई का उपयोग करते हैं, इस जादू का एक ओर तरह करते हैं। क्योंकि सलाई चपटी होती है। इसको लम्बाई की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जाता है, और उल्टा करके दोनों को हमेशा रखना चाहिये और बाहर निकालना चाहिये, यह ख्याल रहे।

यह तरीका भी अच्छा है। परंतु सलाई को होशियारी से अन्दर





समाचार वगैरह

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि अमेरीका की सीडर रैपिड्स (आयोवा) स्थित 'कोलिन्स रेडियो कंपनी' एक यन्त्र तैयार कर रही है, जिसकी सहायता से हवाई जहाजों के उड़ान के समय टकरा होने की संभावना नहीं रहेगी।

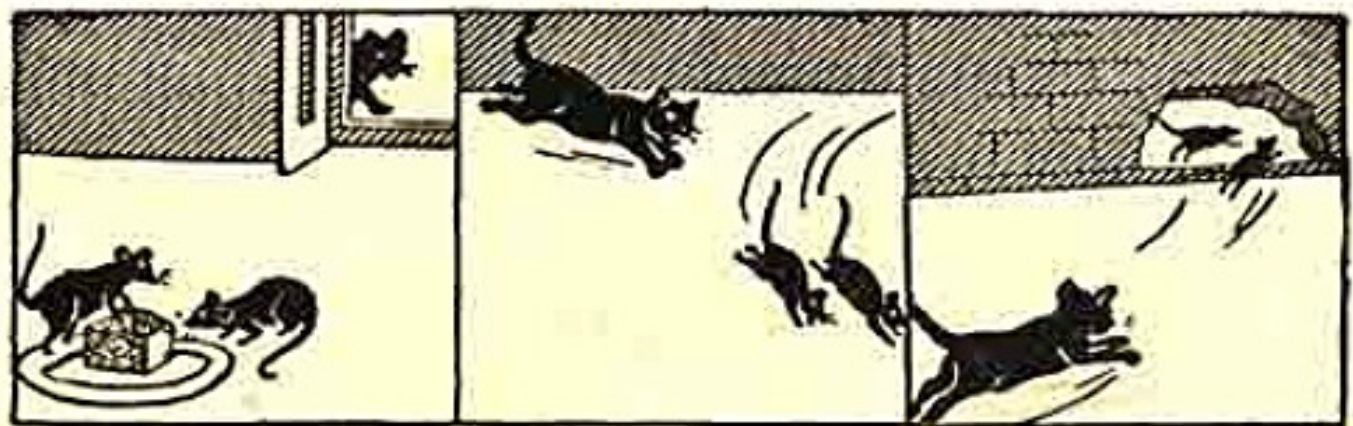
* * *

ग्रामीण क्षेत्रों में भिखमंगों की समस्या का उन्मूलन करने के लिए केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने एक नया सुझाव दिया है। इधर आपने अपने एक भाषण

में कहा कि ग्रामीणों को चाहिए कि वे हृष्ट-पृष्ट भिखमंगों को भीख न देकर काम दें और उसके लिए भिखमंगों को मजदूरी दें। ग्रामीणों को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि काम के अभाव में गाँव का कोई व्यक्ति भीख न माँगे।

* * *

समाचार पत्रों से पता चला कि हाल में रतलाम का एक पुलिस कांस्टेबल अपने आठ वर्षीय पुत्र को पीटकर मार डालने के अभियोग में गिरफ्तार किया गया था। बताया



जाता है कि जब लड़का बेहोश हो गया और मर गया तब कांस्टेबल ने उसकी लाश छिपा दी और फिर वह ड्यूटी पर चला गया। उसकी पत्नी द्वारा सूचना दिये जाने पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

राजस्थान सरकार ने मंसूरी स्थित शिशु-पालन एवं शिशु मनोविज्ञान की 'मानव भारती' संस्था द्वारा दिये जानेवाले डिप्लोमा को राज्य में शिशु शिक्षण एवं शिशुपालन के लिए मान्यता प्रदान की है।

रेशमी के कीड़े पालने के काम को बढ़ाने और उसे लोकप्रिय बनाने की एक योजना के लिए केन्द्रीय उत्पादन मन्त्रालय ने उत्तर प्रदेश सरकार को रु. ३०,२४० का अनुदान मंजूर

किया है। इस योजना के अन्तर्गत देहरादून जिले के प्राथमिक स्कूलों के विद्यार्थियों को शहतूत के पौधों पर रेशम के कीड़े पालने का काम सिखाया जा रहा है। शुरू में प्रशिक्षण का यह कार्यक्रम दस केन्द्रों में चलाया जाएगा।

भारत सरकार ने राज्य सरकारों से विचार-विमर्श करके ऐसे लोगों के प्रशिक्षण की एक योजना तैयार की है, जो दस्तकारी में दिलचस्पी रखते हैं। इस योजना पर द्वितीय पंच वर्षीय योजना में १६ करोड़ ६० लाख रुपया खर्च करने का निश्चय किया गया है। एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार फिलहाल देश में ६० विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों में ११,३९६ व्यक्ति दस्तकारी का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

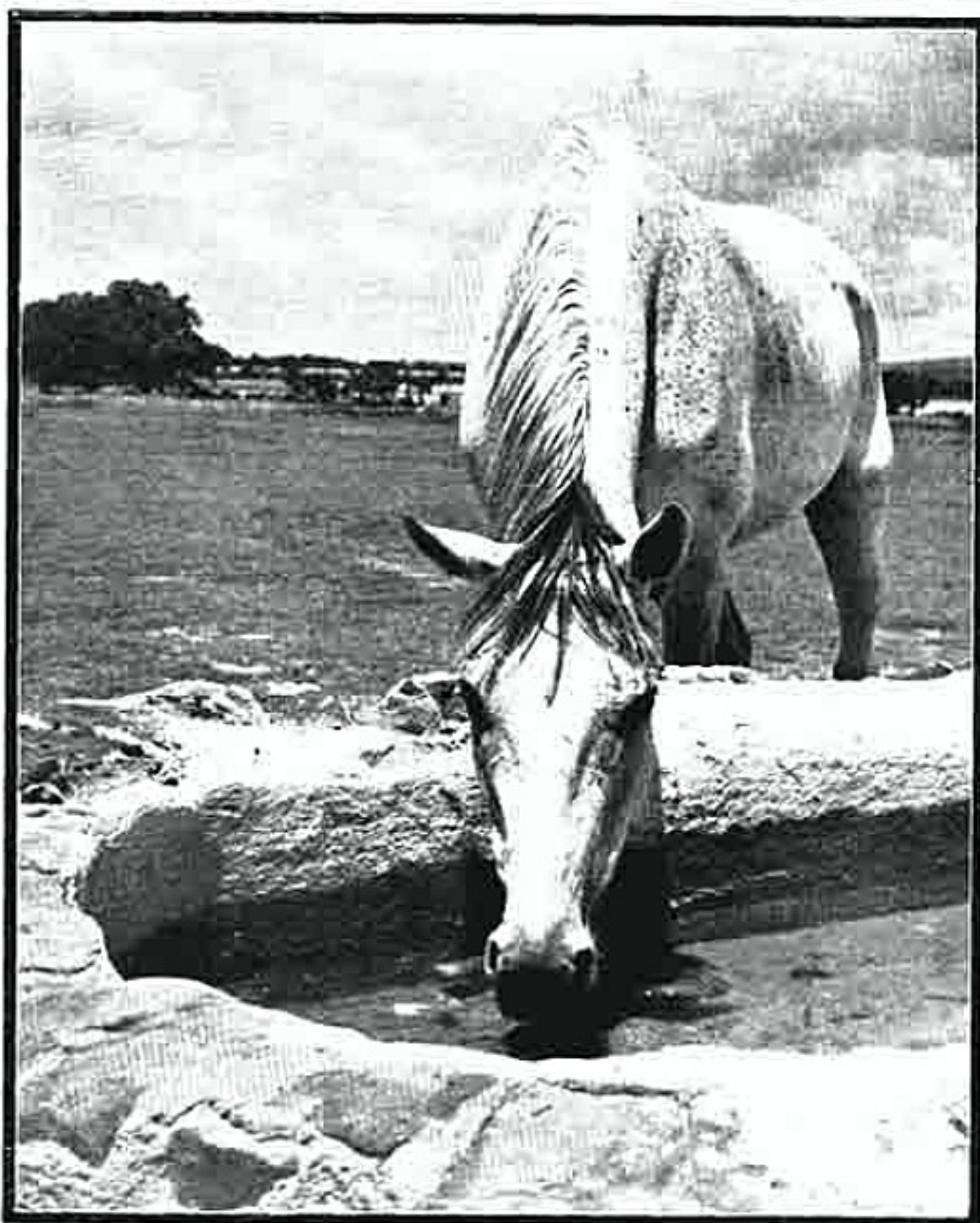


चित्र - कथा



दास और वास के बगीचे में रोज़ कोई चोर आकर आम चुरा ले जाता था। जब कभी वे चोर को पकड़ने के लिए बगीचे में जाते, तब उन्हें कोई भूत जैसी आकृति दिखाई देती। दास और वास डर जाते और वापिस भाग जाते। एक दिन वे दोनों 'टाइगर' के मुँह पर एक तस्वीर लगाकर बगीचे में ले गये। टाइगर ने उस भूत जैसे आकार को देखकर, उस पर कूदा! उस आकृति के पीछे एक चोर लड़का था। वह बहुत डर गया। जब उसने भागने की कोशिश की तो दास और वास ने उसे पकड़ लिया।





पुरस्कृत
परिचयोक्ति

‘पी पानी, प्यास बुझा ले!’

श्रेयकः
श्री पञ्चरतिनाथ, देहली-६

